RNI क्र. 50309/85/पृष्ठ संख्या 44/प्रकाशन तिथि 1 मार्च 2024

अंक 450 ● मार्च 2024

चकमक

बाल विज्ञान पत्रिका

मूल्य ₹50

मुर्गे की छींक

प्रभात
चित्र: प्रोइति रॉय

सोया सीटू जाग रहा है
बार-बार इस छींक से
मुर्गे से बोला मुर्गी ने
छींको ज़रा तमीज़ से

अंक 450 ● मार्च 2024

चकमक

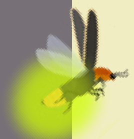

इस बार

मुर्गे की छींक - प्रभात 2

आसमानी रूमाल - प्रमोद पाठक 4

क्या लाल रंग की बोतल कुत्तों... - श्रुति शर्मा 6

रात जो आए तो... - नेचर कॉन्ज़र्वेशन फाउंडेशन 10

तुम भी बनाओ - रॉकिंग बर्ड - प्रभाकर डबराल 12

माजुली द्वीप की यात्रा - शिवनारायण गौर 14

किताबें कुछ कहती हैं - उम्मेहानी शेख 18

क्यों-क्यों 20

कहाँ है मम्मी की चप्पल - असीन्ला क्रोन्गा 24

माथापच्ची 26

गणित है मज़ेदार - तेरी संख्या मुझे पता है - आलोका कान्हेरे 28

पत्ते हो गए हरे - रामकरन 32

भूलभुलैया 33

चित्रपहेली 34

मेरा पन्ना 36

तुम भी जानो 43

शिकार का यह तरीका हिला देगा - रोहन चक्रवर्ती 44

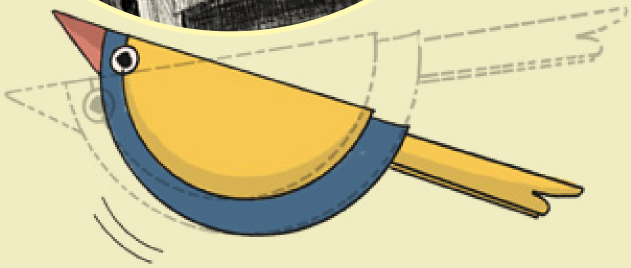

आवरण: समृद्धि गाढवे, पाँचवीं, प्रगत शिक्षण संस्थान, फलटण, सतारा, महाराष्ट्र

सम्पादक
विनता विश्वनाथन

सह सम्पादक
कविता तिवारी

विज्ञान सलाहकार
सुशील जोशी
उमा सुधीर

डिज़ाइन
कनक शशि

सलाहकार
सी एन सुब्रह्मण्यम्
शशि सबलोक

वितरण
झनक राम साहू

एक प्रति : ₹ 50

सदस्यता शुल्क
(रजिस्टर्ड डाक सहित)
वार्षिक : ₹ 800
दो साल : ₹ 1450
तीन साल : ₹ 2250

चन्दा (एकलव्य के नाम से बने) मनीऑर्डर/चेक से भेज सकते हैं।
एकलव्य भोपाल के खाते में ऑनलाइन जमा करने के लिए विवरण:
बैंक का नाम व पता - स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, महावीर नगर, भोपाल
खाता नम्बर - 10107770248
IFSC कोड - SBIN0003867
कृपया खाते में राशि डालने के बाद इसकी पूरी जानकारी accounts.pitara@eklavya.in पर ज़रूर दें।

एकलव्य
फोन: +91 755 2977770 से 2 तक; ईमेल: chakmak@eklavya.in,
वेबसाइट: https://www.eklavya.in/magazine-activity/chakmak-magazine

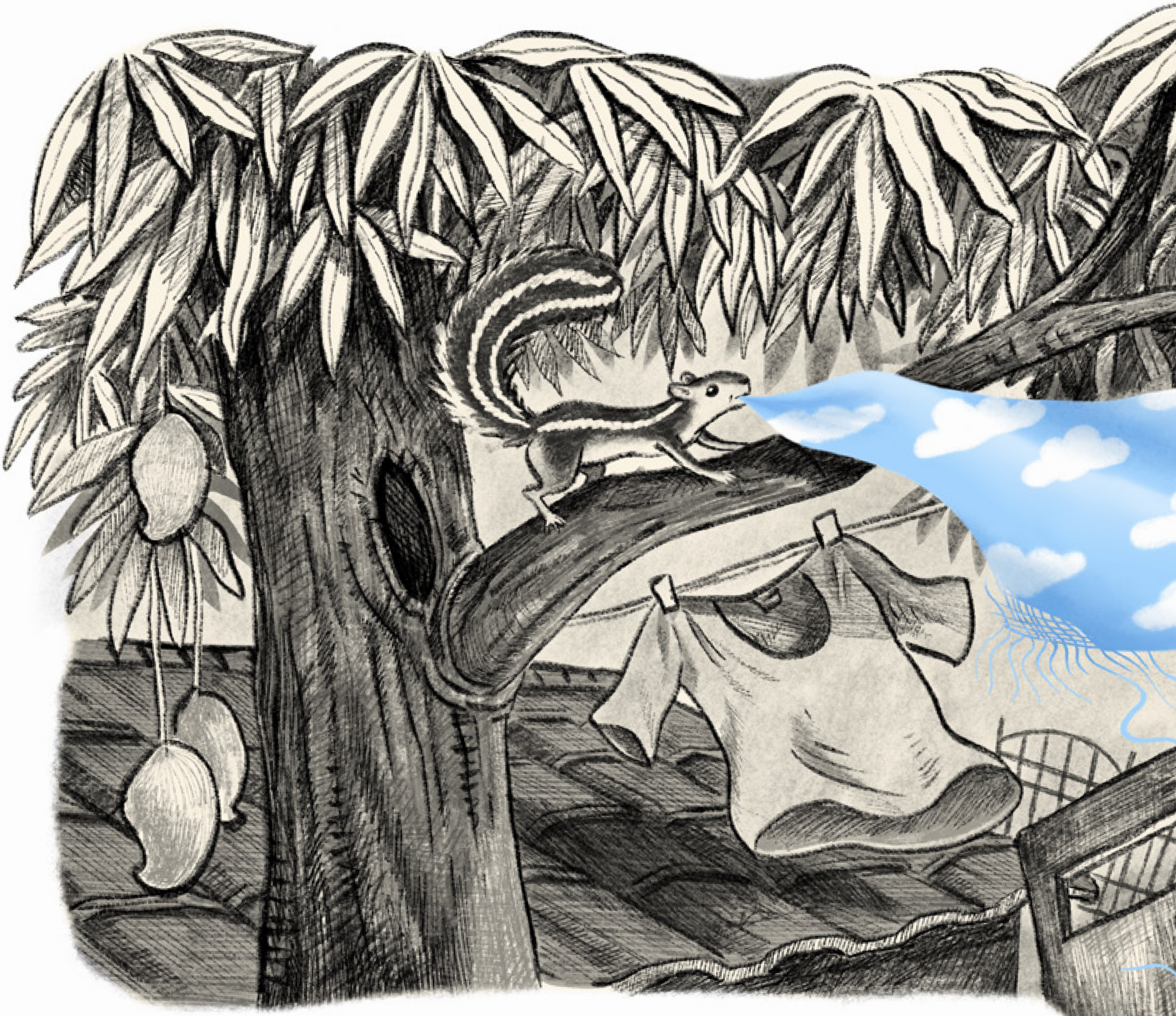

आसमानी रूमाल

प्रमोद पाठक

चित्र: मयूख घोष

तार पर कपड़ों के बीच एक आसमानी रूमाल सूख रहा था। शुरुआती अप्रैल की हवाओं ने उसे कुछ ही देर में सुखा दिया। सूखे रूमाल ने थोड़ी अँगड़ाई ली और तार से फिसलकर छत पर जा गिरा। सालों की बरसात से काली पड़ चुकी छत पर अब वह आसमान का टुकड़ा बन चमकने लगा।

अहाते में लगे आम के पेड़ पर अपना घर बनाने में लगी गिलहरी को भी अपने आने वाले नए बच्चों के लिए आसमान के एक टुकड़े की ज़रूरत थी। उसने रूमाल का एक कोना कुतरकर अपने घोंसले में बिछा लिया।

ऐसा चमकदार आसमान भला किसे नहीं भाता। गैलरी में बिजली के मीटर पर अपना घोंसला बनाने में जुटे गौरैया के जोड़े ने भी कुछ रेशे रूमाल से अपने लिए चुन लिए। उनका घोंसला इस आसमानी रौशनी से चमक उठा।

एक और हवा के झोंके ने रूमाल में बचे आसमान के टुकड़े को उड़ाकर गली की सड़क पर जा बिछाया। बटन और औलिव को अभी-अभी उड़कर आया आसमान का यह टुकड़ा बहुत भाया। वे भौंकते हुए उसकी तरफ लपके और उससे खेलने लगे। दाँतों में एक कोना एक ने दबाया और दूसरा कोना दूसरे ने। इस खींचतान में रूमाल फटकर दो टुकड़े हो गया। उसकी एक लीर से बटन और औलिव खेलते रहे।

गली में लोहे के गेट, खिड़कियाँ बनाने वाले गिरधारी मिस्त्री को अपने काले हाथ पोंछने के लिए इस आसमानी टुकड़े से बेहतर और क्या मिलता। उन्होंने उसे अपने हाथ पोंछने के काम लिया और आसमानी टुकड़े पर कई स्याह बादल छा गए।

उसके बाद ढाई महीने तक आसमान खूब तपा। गिलहरी के बच्चे बड़े होकर आम पर उछल-कूद मचाने लगे। गौरैया के अण्डों से बच्चे निकलकर फुर्रर्र हो गए। बटन और औलिव अब पिल्लों से बड़े कुत्ते बन गए। गिरधारी ने अनगिनत बार अपने काले हाथ उस रूमाल के टुकड़े से पोंछते हुए कई जोड़ी गेट व खिड़कियाँ बना दिए।

अचानक जून के आखिरी दिन शाम में ज़ोरों-से आँधी चली। वह काला कपड़ा उसके साथ आसमान की तरफ उड़ गया। शाम गहराने के साथ-साथ आसमान में बादल छा गए, बिजलियाँ चमकने लगीं। रात नौ बजते-बजते मूसलाधार बारिश होने लगी। लगातार पौन घण्टे बरसने के बाद कुछ थमी, मगर हल्की-हल्की बारिश सुबह तक होती रही। सुबह गेट के बाहर बने पानी के गड्ढे में एक आसमानी टुकड़ा चमक रहा था।

क्या लाल रंग की बोतल कुत्तों को भगाती है?

श्रुति शर्मा

एक दिन एक परिचित से मिलने जाना हुआ। मैंने देखा कि उनके गेट के पास लाल रंग के तरल से भरी एक बोतल रखी हुई है। नज़र थोड़ा बाईं ओर गई तो देखा कि हर घर के बाहर लाल पानी की बोतल रखी है। मैंने उत्सुकता से पूछा कि ये बोतल क्यों रखी है? और इसमें क्या है? उन्होंने बड़े विश्वास से बताया कि ये बोतल कुत्तों को भगाने का एक चमत्कारी उपाय है। उनका और कई अन्य लोगों का मानना है कि इस बोतल को देखकर कुत्ते डर जाते हैं और इस वजह से घरों के बाहर गन्दा (पॉटी) नहीं करते।

इन बोतलों को देखकर मेरे मन में सवाल उठा कि इन बोतलों में आखिर भरा क्या जाता है? आखिर लोग इतने यकीन से कैसे कह रहे हैं कि कुत्ते लाल रंग की बोतल देखकर उस जगह को गन्दा नहीं करते। इसलिए मैंने इस मसले को समझने के लिए कई तरह से जाँच-पड़ताल की और प्रयोग किए।

प्रयोग - 1

जिन लोगों के घरों के बाहर ये बोतल रखी थी, उनसे पूछने पर पता चला कि कॉलोनी की किराना दुकान में एक टेबलेट मिलती है। टेबलेट दिखने में तो हरे रंग की होती है, लेकिन जब इसको पानी में डालते हैं तो ये धीरे-धीरे पानी को लाल कर देती है। कुछ लोगों का कहना था कि ये टेबलेट महावर (आल्ता) की है। मेरी टोली के बच्चों ने इस टेबलेट को देखा और कहा कि दीदी ये आल्ते की टेबलेट तो बिलकुल नहीं हो सकती। ये टेबलेट होली के पक्के रंग की लगती है! तो हमने पहला काम ये किया कि बोतल में लाल रंग बनाकर अपने घर के बाहर रख दिया।

प्रयोग - 2

हमने अपने और आसपास के घरों के बाहर अलग-अलग रंगों (जैसे लाल, हरे, बैंगनी, नीले और पीले) के वॉटर कलर से रंगी एक-एक बोतल रख दी। अलग-अलग रंगों से प्रयोग करने का मकसद सिर्फ यह जानना था कि कुत्ते इन अलग-अलग रंगों के प्रति कैसी प्रतिक्रिया देते हैं।

प्रयोग 1 और 2 के दौरान हमने देखा कि कुत्ते इन रंगों वाली बोतलों के पास आकर बैठ रहे थे। उन्हें रंग भरी या रंगों से पुती बोतलों से कोई फर्क नहीं पड़ा था। इस दौरान हमने ये भी देखा कि कुछ लोगों के घर के सामने एक नहीं बल्कि कई सारी बोतलें रखी थीं। इन्हें देखकर हमें लगा कि कुत्ते वहाँ इसलिए भी नहीं फटकते होंगे, क्योंकि उनकी जगह तो ढेरों बोतलों ने घेर रखी थी। और घर मालिकों को लग रहा था कि कुत्ते रंगों भरी इन चमत्कारी बोतलों से डरकर भाग रहे हैं।

प्रयोग - 3

अलग-अलग रंगों के प्रति कुत्तों की प्रतिक्रिया देखने के लिए सिर्फ बोतल से काम नहीं चलने वाला था। तो मैंने और बच्चों की टोली ने सोचा कि हमें कुत्तों के खाने की चीज़ों को रंग करके देखना होगा। इसके लिए हम पालतू जानवरों की दुकान से कुत्ते के लिए कैल्शियम से बनी हड्डियाँ लेकर आए। और सफेद हड्डियों को अलग-अलग खाद्य रंगों (food colour) से रंग दिया। एक हड्डी को हमने सफेद ही रहने दिया। और इन हड्डियों को एक-एक करके हमारी गली के कुत्तों को खाने को दिया।

पहले सफेद हड्डी खिलाई जिसको कुत्ता एक पल में चट कर गया। थोड़ी-थोड़ी देर बाद लाल, हरी, नीली और फिर पीली हड्डियाँ खिलाईं। हमने देखा किसी भी रंगीन हड्डी को कुत्ते वैसे ही खा रहे थे जैसे बिना रंग की हुई हड्डी को खाया था। फर्क सिर्फ इतना था कि रंगीन हड्डियों को खाने में उन्हें थोड़ा समय लगा।

इसकी एक वजह हमने ये सोची कि शायद रंगी हुई हड्डियों की गन्ध की वजह से कुत्ते उन्हें खाने में थोड़ा ज़्यादा समय ले रहे हैं। कई कुत्तों के अवलोकनों में हमें यही देखने को मिला। यहाँ यह देखना लाज़मी होगा कि कुत्ते दुनिया को किन रंगों में देखते हैं।

आँख के पिछले हिस्से में रेटिना नामक पर्दे में प्रकाश और रंग को भाँपने वाली संवेदी कोशिकाएँ होती हैं। ये दो प्रकार की होती हैं – छड़ और शंकु (rods and cones)। इनकी संख्या लाखों में होती है। विभिन्न प्रजातियों में विभिन्न प्रकार की प्रकाश संवेदी कोशिकाएँ होती हैं। प्रकाश को भाँपने वाली संवेदी कोशिकाओं को छड़ कहा जाता है और रंग को पहचानने वाली संवेदी कोशिकाओं को शंकु। दरअसल, जैसा इनका आकार है वैसा ही इनका नाम है। शंकु संवेदियों की दो विशेषताएँ होती हैं: रंग और बारीक विवरण को भाँपना। जब प्रकाश छड़ या शंकु कोशिकाओं से टकराता है, तो वे सक्रिय हो जाती हैं और मस्तिष्क को संकेत भेजती हैं।।

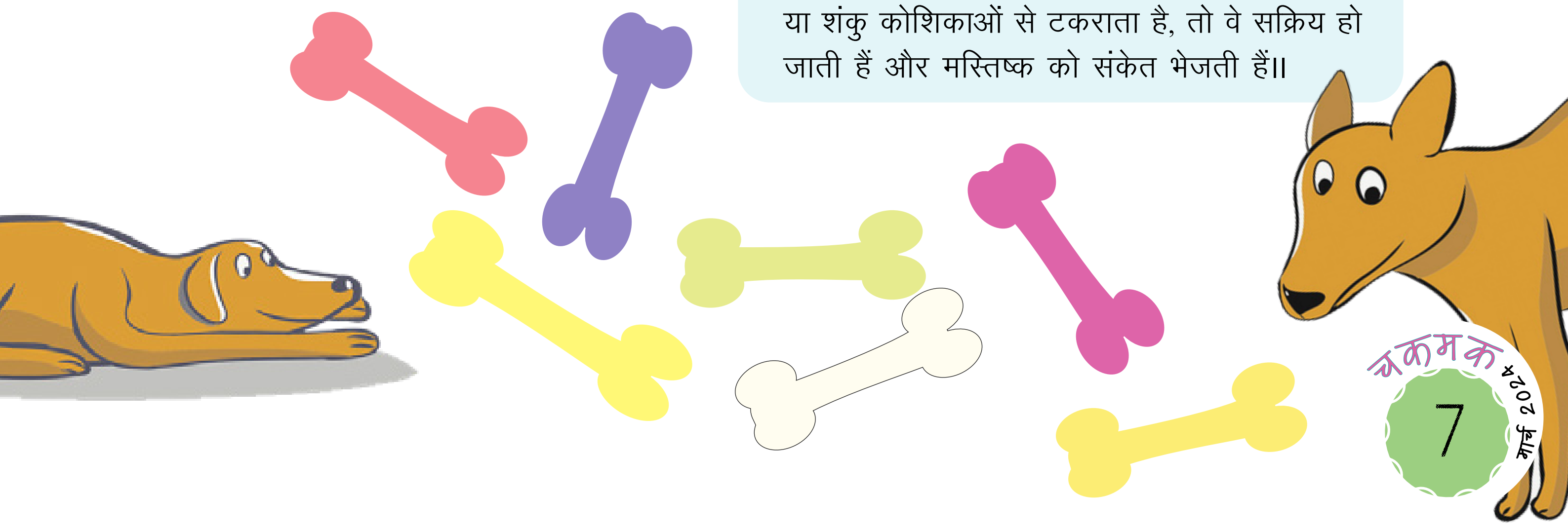

कुत्ते की नज़र से दुनिया

कहा जाता है कि कुत्ते कलर ब्लाइंड होते हैं, यानी वे रंगों को नहीं देख सकते। लेकिन असल बात यह है कि कुत्तों के पास वास्तव में कुछ रंगों को देखने की क्षमता तो है। हाँ, उन्हें हरे, लाल और कभी-कभी नीले रंग में भी अन्तर समझ में नहीं आता है।

अक्सर ऐसा माना जाता है कि कलर ब्लाइंड व्यक्ति सिर्फ काला और सफेद रंग ही देख पाता है। असल में कलर ब्लाइंडनैस का मतलब है कि आँखें सामान्य रूप में रंगों को नहीं देख पातीं। इसे कलर डेफिशिएंसी भी कहा जाता है। इसका मुख्य कारण आम तौर पर आँखों के भीतर शंकु के उत्पादन में दोष होता है। सामान्यत: इन्सान की आँखों में तीन प्रकार के शंकु होते हैं। इसका मतलब है कि इन्सान में हरे, नीले व लाल और इनके मिश्रण से बने अनेक रंगों को देखने की क्षमता होती है। इन्सान में कलर ब्लाइंडनेस का कारण तीन प्रकार के शंकुओं में से एक का सही ढंग से काम न करना है। दूसरी ओर कुत्तों की आँख में दो प्रकार के शंकु होते हैं। यानी कि कुत्तों में दो (पीले और नीले) रंगों की पहचान करने की क्षमता होती है।

अगर हम सरल तरीके से यह समझना चाहते हैं कि कुत्ते दुनिया को कैसे देखते होंगे तो हम एक कलर ब्लाइंड इन्सान की नज़र की तुलना एक सामान्य कुत्ते की नज़र से कर सकते हैं। कलर ब्लाइंड इन्सान और एक सामान्य कुत्ते दोनों की ही आँखों में दो प्रकार के शंकु पाए जाते हैं। इस आधार पर हम कुत्तों को

कलरब्लाइंड कहते हैं – यह कोई विकार नहीं है बल्कि कुत्तों की आँख सामान्य रूप से ऐसी ही होती है।

चूँकि कुत्ते की आँखों में नीले और पीले रंग की पहचान करने वाले शंकु ही होते हैं, इसलिए वे रंगों के लगभग 10,000 विभिन्न संयोजन देख सकते हैं। दूसरी ओर इन्सान के लाल, हरे और नीले शंकु मिलकर रंगों की एक करोड़ छटाएँ देख सकते हैं।

खास बात यह है कि कुत्ते लाल व हरे रंगों को नहीं देख पाते। लाल और हरे रंग शायद कुत्ते को भूरे की अलग-अलग छटा जैसे दिखते हैं। वे गुलाबी, बैंगनी और नारंगी जैसे रंगों को भी नहीं देख सकते हैं।

कुछ शोधकर्ताओं ने कुत्तों के प्रशिक्षकों को ऐसी सलाह दी है कि कुत्तों को घास में प्रशिक्षण देते समय लाल कपड़े पहनने से बचें। इससे उन्हें घास व प्रशिक्षक में अन्तर करने में परेशानी होती है। वहीं, कुछ अन्य शोधकर्ताओं ने मालिकों को सलाह दी है कि यदि कुत्ते को घास के मैदान में फ्रिस्बी या बॉल खेलाने ले जा रहे हैं तो कोशिश करें कि खिलौने नीले रंग के हों न कि लाल रंग के। अब इससे यह तो तय बात है कि रंगीन बोतलों से कुत्तों के डरने या भागने का दूर-दूर तक कोई वास्ता नहीं है।

स्रोत फीचर्स से साभार

कोई तस्वीर कुत्ते की आँखों से कैसी दिखती होगी, इसके कुछ उदाहरण हमने नीचे दिए हैं। यदि तुम ऐसी और तस्वीरें देखना चाहो तो इन वेबसाइट्स पर जा सकते हो:

https://www.livescience.com/34029-dog-color-vision.html

https://www.sciencealert.com/how-dogs-see-the-world-compared-to-humans

इन्सान की नज़र से | **कुत्ते की नज़र से**

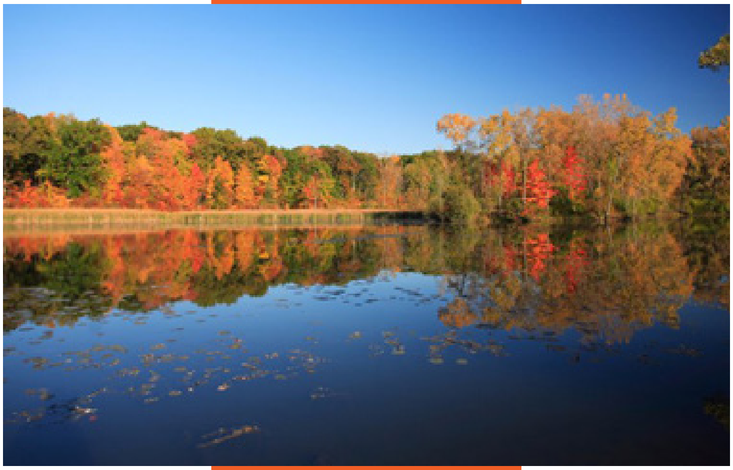

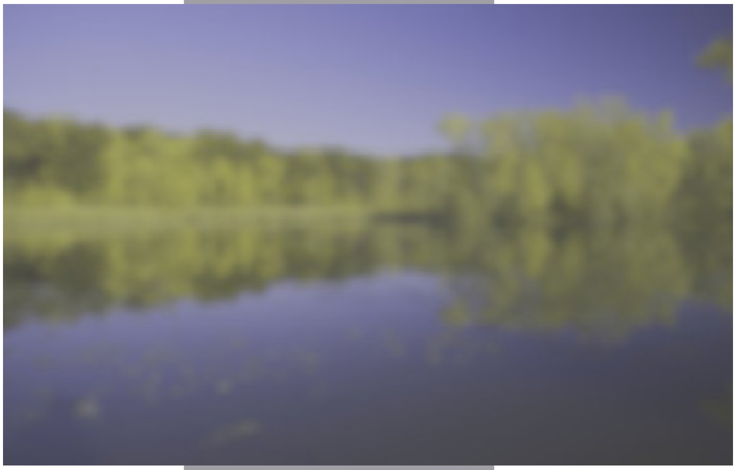

रात जो आए तो...

अनुवाद: कविता तिवारी

अँधेरे का फायदा

कुछ जीवों को दिन की गर्मी की बजाय रात की ठण्डक ज़्यादा भाती है।

लेकिन केवल यही वजह नहीं है कि कुछ जीव अँधेरे को पसन्द करते हैं। निशाचर होने से ये जीव अपने उन परभक्षियों (predators) और प्रतिस्पर्धियों से बच पाते हैं जो दिन में सक्रिय होते हैं।

निशाचर जीवों ने अँधेरे में 'देखने' के कई तरीके खोजे हैं।

छठी इन्द्रिय

उल्लुओं की आँखें और पुतलियाँ बड़ी होती हैं। इससे बहुत कम उजाले में भी उनकी आँखों में ज़्यादा रौशनी जाती है। और इस तरह ये अँधेरे में भी देख पाते हैं।

चमगादड़ आवाज़ें निकालते हैं और इन आवाज़ों के अपने आसपास की चीज़ों से टकराकर लौटने का इन्तज़ार करते हैं। वापस आने वाली परावर्तित आवाज़ों के आधार पर वो तय करते हैं कि ये चीज़ें उनसे कितनी दूरी पर हैं।

चूहे अँधेरे में अपना रास्ता खोजने के लिए अपनी मूँछों का इस्तेमाल करते हैं। ठीक वैसे ही जैसे कि अँधेरे में हम अपनी उँगलियों के पोरों का इस्तेमाल करते हैं।

nature conservation foundation
science for conservation

फील्ड डायरी के लिए

श्शश्श.....

कुछ मिनटों के लिए अपने कमरे के पंखे व लाइट बन्द करके रात के सन्नाटे में आने वाली आवाज़ों को सुनो। यदि तुम किसी ऐसी जगह पर रहते हो जहाँ रात को भी सिर्फ ट्रैफिक की आवाज़ें सुनाई देती हों तो किसी बड़े से कहो कि वे सूर्यास्त के थोड़ी देर बाद तुम्हारे साथ किसी शान्त जगह पर सैर के लिए चलें।

तुमने क्या सुना?

तुम्हें किन-किन जीवों की आवाज़ें सुनाई दीं? शायद मच्छर, छिपकली, मेंढक, झींगुर की?

हो सकता है कि तुम्हें बिजली के खम्भे की ओर आकर्षित कीटों का शिकार करते हुए कोई चमगादड़ दिख जाए। या फिर तुम्हें कोई पतंगा या आसमान में उड़ते किसी फ्लाइंग फॉक्स (फलों को खाने वाले बड़े चमगादड़) की काली आकृति नज़र आ जाए। या फिर एक पेड़ से दूसरे पेड़ पर चुपचाप उड़ता कोई उल्लू दिख जाए।

उन सभी जीवों की एक लिस्ट बनाओ जो तुम्हें दिखे या जिनकी आवाज़ें तुम्हें सुनाई दीं। यदि तुम उनमें से किसी को पहचान ना पाओ तो उसका विवरण हमें लिखकर या चित्र बनाकर भेजो।

हमें लिखो

क्या तुम्हें अपने आसपास रात में सक्रिय रहने वाले कोई जीव दिखाई दिए? अपनी फील्ड डायरी के नोट्स व चित्र हमें merapanna.chakmak@eklavya.in पर भेजो।

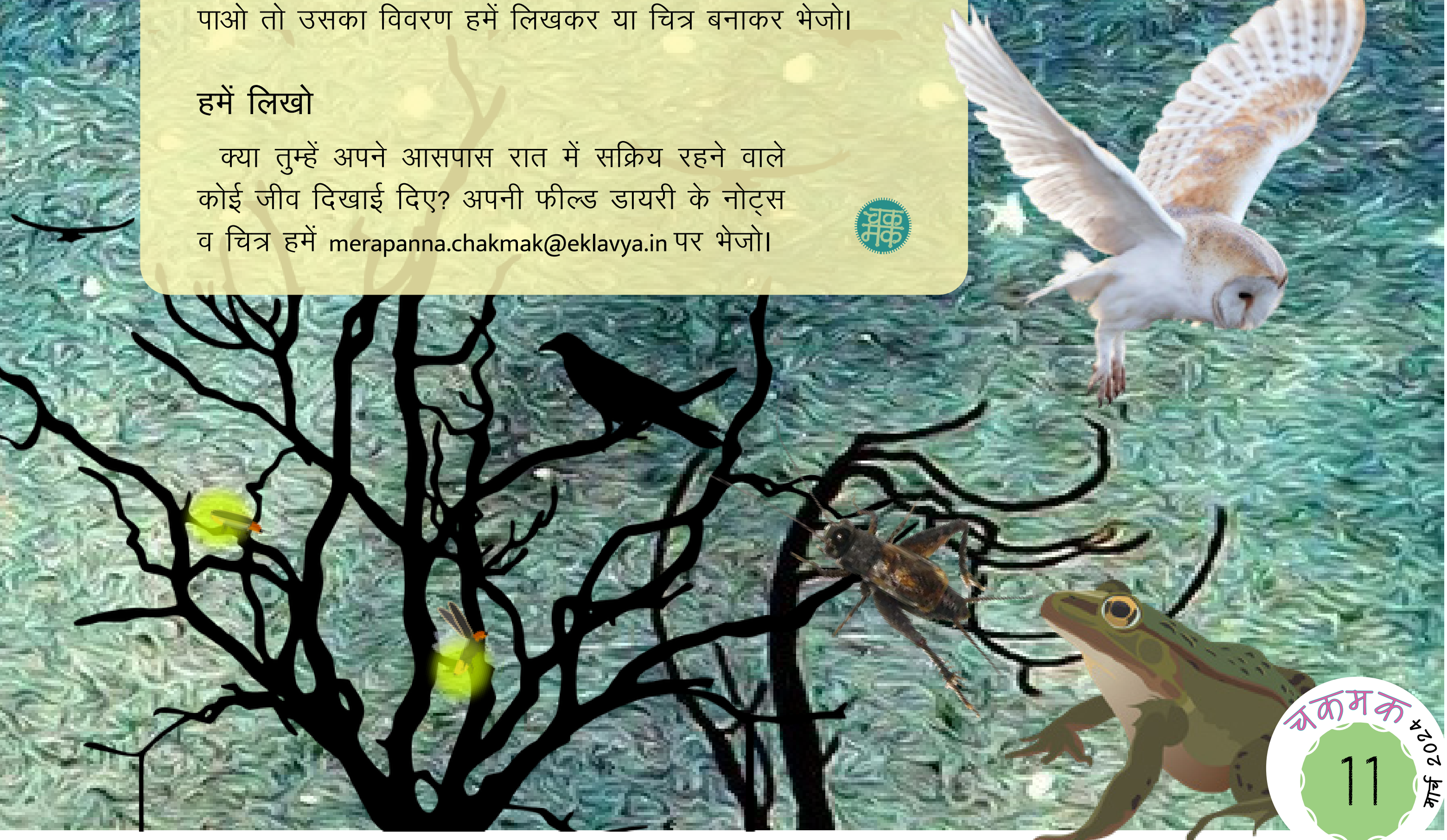

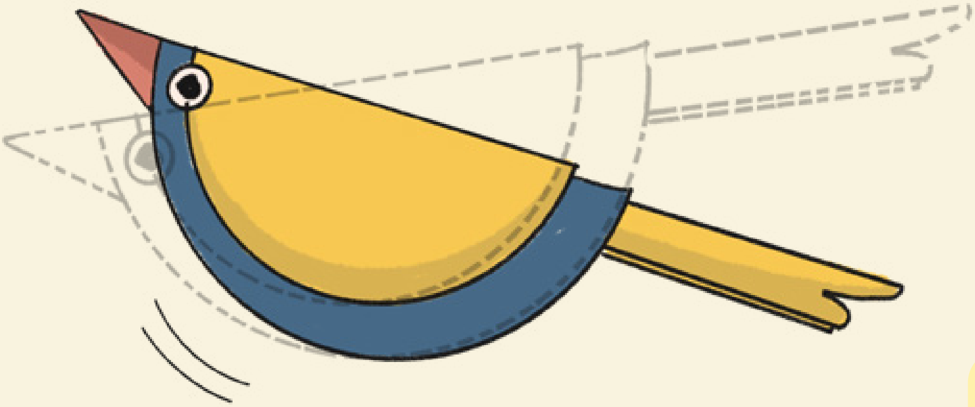

रॉकिंग बर्ड

प्रभाकर डबराल

तुम भी बनाओ

सामग्री: अलग-अलग रंग के मोटे कागज़, कैंची, ग्लूस्टिक या गोंद

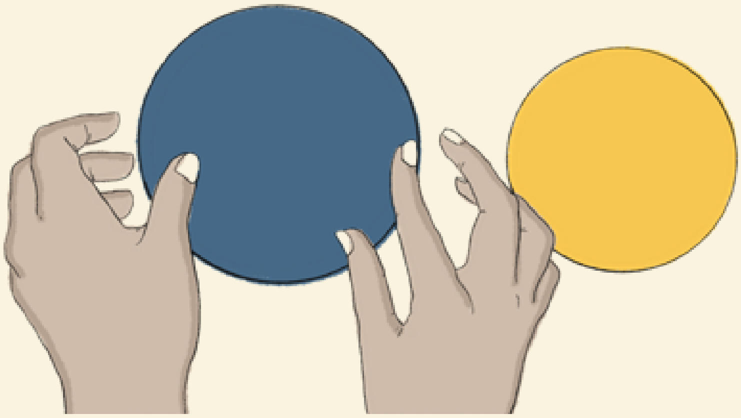

1. दो कागज़ों से एक-एक गोला काटो। ध्यान रखना कि एक गोला दूसरे गोले से 2 सेंटीमीटर छोटा हो।

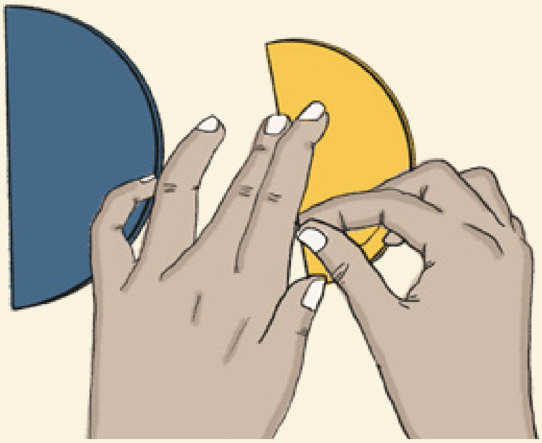

2. दोनों गोलों को बीच से मोड़ लो।

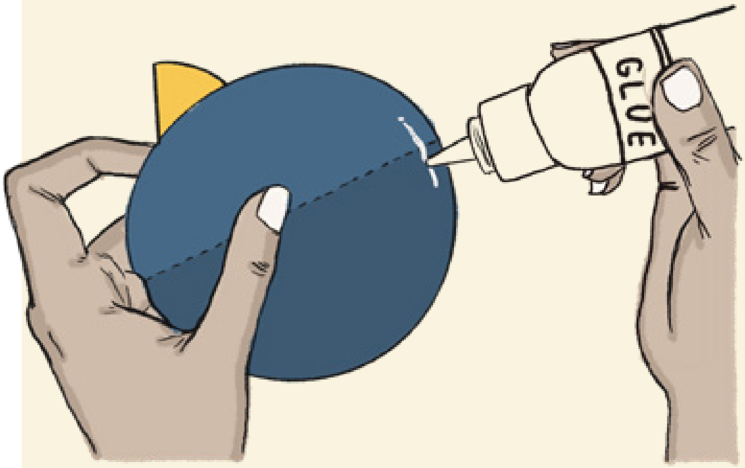

3. बड़े गोले के बाहरी हिस्से पर गोंद लगाओ।

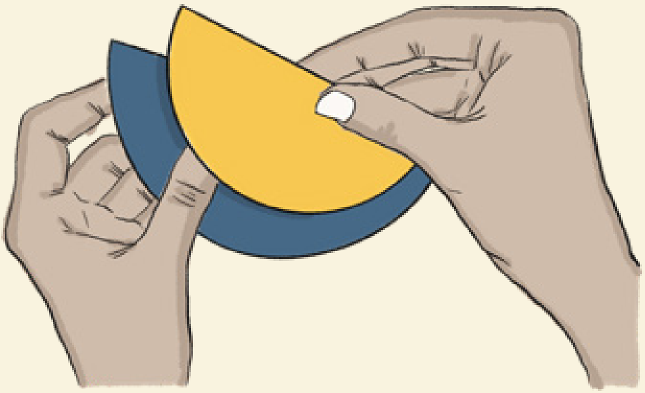

4. छोटे गोले के भीतरी हिस्से को बड़े गोले के ऊपर चिपकाओ।

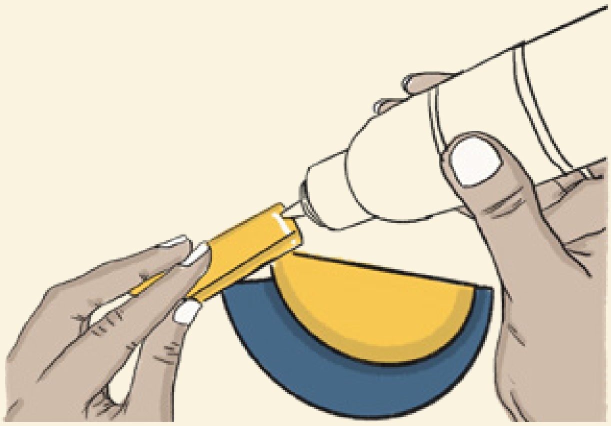

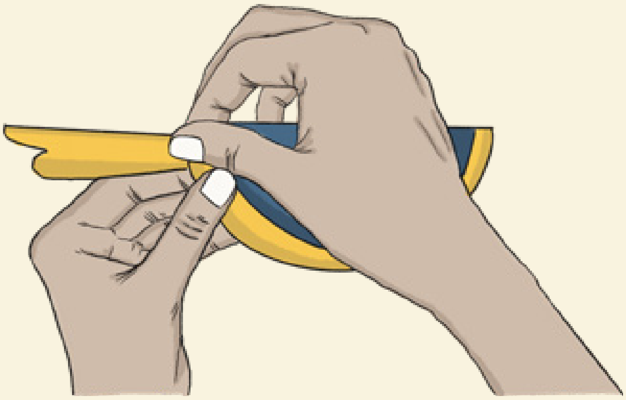

5. कागज़ से चिड़िया की पूँछ जैसी एक आकृति काटो और इसे बड़े गोले के अन्दरूनी हिस्से पर चिपकाओ।

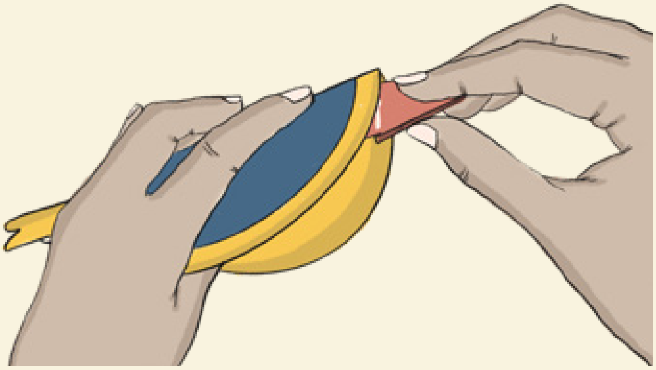

6. अब एक छोटा तिकोन काटकर उसे दो भागों में मोड़ो। इस तिकोन से चिड़िया की चोंच बनेगी। चोंच को बाहरी गोले के अन्दरूनी हिस्से पर चिपकाओ।

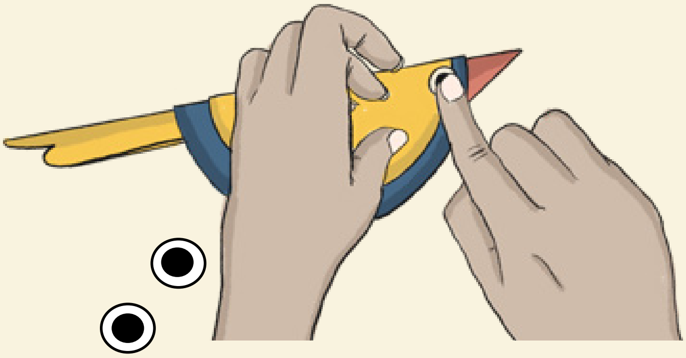

7. आँख बनाने के लिए काले और सफेद कागज़ से दो जोड़ी छोटे गोले काटो और काले गोलों को सफेद कागज़ पर चिपका लो। आँखों को चिड़िया की चोंच के पास दोनों ओर चिपकाओ।

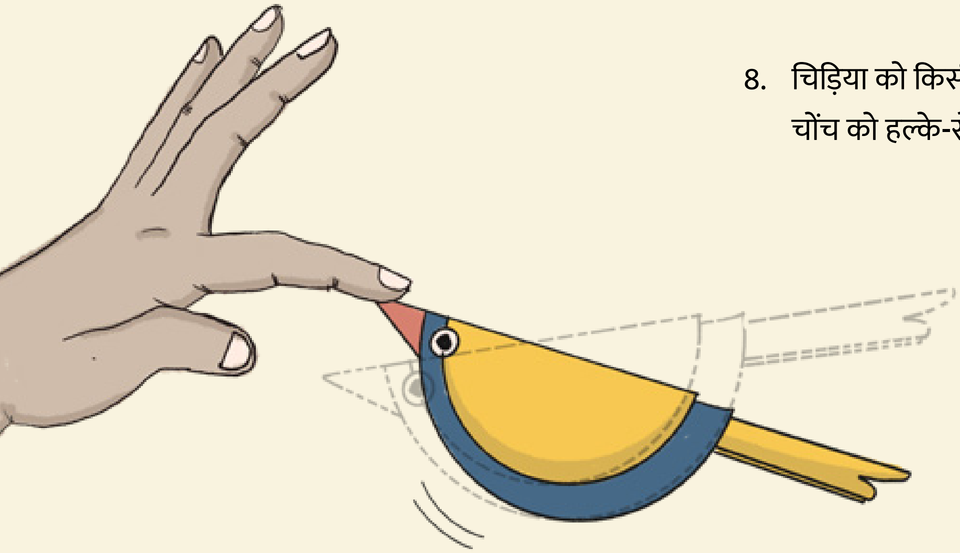

8. चिड़िया को किसी समतल सतह पर रखकर उसकी चोंच को हल्के-से हिलाओ तो चिड़िया झूलने लगेगी।

बनाने के इस तरीके में कुछ बदलाव करके कई और चीज़ें बनाई जा सकती हैं। करके देखो और तुम जो भी बनाओ उसकी फोटो हमें ज़रूर भेजना।

माजुली द्वीप की यात्रा

शिवनारायण गौर

नदी का पानी इतना साफ है कि लगता है जैसे आसमान नीचे उतर आया हो!

हाल ही में मैं माजुली द्वीप की यात्रा पर गया था। यह ब्रह्मपुत्र नदी के बीच स्थित है और दुनिया का सबसे बड़ा नदी द्वीप है। माजुली पूर्वोत्तर के असम राज्य का एक ज़िला भी है। वैसे तो पूर्वोत्तर के सभी राज्यों की खूबसूरती के क्या कहने, पर माजुली की खूबसूरती तो निराली है। यहाँ की संस्कृति भी एक अलग ही मिसाल है।

कैसे पहुँचें माजुली

भारत के किसी भी हिस्से से माजुली की यात्रा करने के लिए सबसे पहले असम की राजधानी गुवाहाटी जाना पड़ता है। गुवाहाटी से फिर जोरहट जाना होता है। जोरहट के निमति घाट से माजुली के कुछ घाटों पर फैरी (पानी के जहाज़) से जाने का रास्ता है। निमति घाट से हमें शाम की फैरी से जाने का मौका मिला। शाम के समय यात्रा करना एक मज़ेदार अनुभव रहा। खास तौर पर इसलिए क्योंकि नदी के विशाल घाट से सूर्यास्त का नज़ारा देखना बहुत ही आनन्ददायक था। माजुली में सूर्यास्त तकरीबन 4:30 बजे होने लगता है। नदी पार करते हुए किसी विशाल समुद्र जैसा दृश्य नज़र आता है।

जिस फैरी से हम यात्रा कर रहे थे उसमें करीब 200 सवारी बैठी थीं। साथ ही उसमें कई सारे दुपहिया और चार पहिया वाहन भी रखे थे। बारिश के कारण फैरी बन्द हो जाती हैं। इसलिए इस समय को छोड़कर अमूमन साल भर ही देश-विदेश से लोग माजुली घूमने आते हैं।

कमलाबाड़ी घाट पहुँचने के बाद हम कमलाबाड़ी कस्बे से गुज़रे। माजुली कुछ छोटे कस्बों और खूब सारे गाँवों में बँटा हुआ है। गरमूर माजुली का एक बड़ा कस्बा है। यहाँ बहुत-से पर्यटक मिलते हैं। यहाँ कई सारी छोटी-छोटी कॉटेज हैं, जहाँ रुका जा सकता है। हम भी ऐसी ही एक कॉटेज में रुके।

मिसिंग समुदाय और उनकी संस्कृति

माजुली में ज़्यादातर आदिवासी समुदाय के लोग रहते हैं। यहाँ तकरीबन 80 प्रतिशत आबादी मिसिंग आदिवासी समुदाय की है। ये माजुली ज़िले के लगभग सभी क्षेत्रों में रहते हैं। दो दिन गरमूर में रहने के बाद मैं जिस दोस्त के साथ ठहरा था, वो मिसिंग समुदाय से ही है।

ये लोग आपस में बहुत मिल-जुलकर रहते हैं। इनके घरों में आम तौर पर सुपारी के पेड़ बहुत नज़र आते हैं। ताम्बुल-पान देना इनके स्वागत करने का एक तरीका है। किसी मेहमान के आने पर उसे अपांग (एक पेय पदार्थ) दिया जाता है। अपांग का मतलब खुशी है।

माजुली के घर

चूँकि माजुली नदी का द्वीप है, इसलिए यहाँ बाढ़ बहुत आती है। माजुली के गाँवों में 3 फीट तक पानी आ जाता है। इसलिए यहाँ घर ज़मीन से कुछ फीट की ऊँचाई पर होते हैं। घर के नीचे की इस जगह में लोग बकरी, मुर्गी इत्यादि जानवर रखते हैं (एक खास बात यह है कि माजुली में गाय, बकरी और कुत्ते साइज़ में ज़रा छोटे होते हैं)। बाँस से फर्श बनाते समय इस बात का खयाल रखा जाता है कि बीच की जगह से खाने-पीने का सामान नीचे डालने की गुंजाइश हो। इससे घर के नीचे रह रही गाय, बकरी, सूअर, मुर्गी को दाना-पानी मिलते रहता है।

मजूली के ज़्यादातर घर बाँस और लकड़ी के बने हैं। लकड़ी की सीढ़ी के सहारे घर में जाना पड़ता है। मिसिंग लोगों के घरों में वैसे तो दरवाज़े होते ही नहीं हैं। और यदि किसी के घर में दरवाज़ा हो तो भी उसमें ताला नहीं लगाया जाता। घर में एक कपड़ा लटकाकर भी लोग कई दिनों के लिए बाहर जा सकते हैं। चूँकि घर का फर्श ऊँचाई पर होता है, इसलिए किसी जानवर के घर में घुसने का खतरा भी नहीं होता।

घर बनाने का प्रमुख स्रोत है बाँस... ये घर हमारा ठिकाना था।

आम तौर पर घरों का फर्श ज़मीन से ढाई-तीन फीट की ऊँचाई पर होता है... सीढ़ी की मदद से घर में आते-जाते हैं।

मिसिंग समुदाय का बहुउपयोगी चूल्हा! इसके ऊपर लगे झूले में सेंकने या भूनने वाली सामग्री रखी जाती है।

मिसिंग घरों की एक और मज़ेदार चीज़ है चूल्हा। यह चौकोर होता है और मिट्टी का बना होता है। इसके ऊपर एक झूला जैसा लटकता है। कई बार दो झूले भी होते हैं। इनमें भूनने वाला सामान रखा जाता है। यानी चूल्हे पर बनने वाले खाने के अलावा उस चूल्हे की आँच से खाने-पीने का और भी सामान साथ-साथ तैयार होते रहता है।

बाढ़ का आना यानी खुशी का आना

आम तौर पर बाढ़ को एक आपदा की तरह देखा जाता है। परन्तु माजुली में ऐसा नहीं है। यहाँ बाढ़ का आना खुशी का आना है। लोग मानते हैं कि यदि बाढ़ आएगी तो उनके खेतों में फसलों की पैदावार बढ़ेगी। ज़मीन उपजाऊ होगी। यहाँ प्रमुख रूप से धान की खेती होती है। रवि और खरीफ दोनों ही फसलों में अलग-अलग वैरायटी की धान की खेती की जाती है। खरीफ यानी बारिश के समय बाहू और हैली धान की खेती होती है। इस धान की खास बात यह है कि बाढ़ जितनी ज़्यादा होती है, इसकी पैदावार उतनी ही बढ़ जाती है।

चूँकि बाढ़ को बहुत ही स्वाभाविक घटना की तरह देखा जाता है, इसलिए लोग बाढ़ के दिनों की तैयारी पहले से करके रखते हैं। गाँव के सभी जानवरों के लिए गाँव में ही किसी ऊँची जगह पर रहने का ठिकाना बनाया जाता है। लोग अपने घरों में छोटी नाव रखते हैं ताकि बाढ़ के वक्त एक-दूसरे के घर आ-जा सकें या अपने जानवरों को खाना इत्यादि दे सकें।

मुखौटे – माजुली की मिट्टी की सौगात

माजुली के प्रमुख आकर्षण ब्रह्मपुत्र नदी की फैरी यात्रा, सात्र (मन्दिर), बर्ड वॉचिंग (पक्षी विहार) और मुखौटे का काम हैं। यहाँ करीब 22 सात्र हैं, जिनकी खूबसूरती आकर्षित करती है। चूँकि माजुली चारों ओर पानी से घिरा हुआ है, इसलिए यहाँ देशी-विदेशी पक्षी बहुत आते हैं। और इन्हें देखने बहुत-से पक्षी प्रेमी भी आते हैं।

माजुली के मुखौटे दुनिया भर में मशहूर हैं। यहाँ मुखौटे बनाने का काम 500 सालों से अनवरत चल रहा है। ये मुखौटे यहाँ से दुनिया के कई देशों में जाते हैं। यहाँ तीन तरह के मुखौटे बनाए जाते हैं। बड़े मुख वाले यानी जो शरीर के आकार के होते हैं। लोतोकाइमुखा यानी जिसकी आँखें और जीभ हिल सकती हैं। और आखिरी है मुखमुखा मुखौटा यानी मुँह के आकार का।

एक विशालकाय राक्षस का मुखौटा।

मुखौटे बनाने का काम सामागुरी नाम के एक सात्र में होता है। कहते हैं कि जिस गाँव में मुखौटे बनाने का काम होता है वहाँ की मिट्टी बहुत खास किस्म की है। पूरे माजुली में थिएटर की गतिविधि एक महत्वपूर्ण आकर्षण है। गाँव-गाँव में रासलीला और थिएटर की विभिन्न गतिविधियों का संचालन किया जाता है। थिएटर में भी यहाँ के मुखौटे इस्तेमाल किए जाते हैं।

खतरे में माजुली

इस द्वीप की मेरी यह दूसरी यात्रा थी। इस बार पूरे माजुली में घूमने का मौका मिला। यह द्वीप दुनिया भर के पर्यटकों के लिए आकर्षण का केन्द्र है। हालाँकि माजुली कई तरह के खतरे में भी है। जैसे एक सर्वेक्षण के अनुसार 1853 में माजुली का कुल क्षेत्रफल 1246 वर्ग किलोमीटर था, परन्तु हर वर्ष बाढ़ और भू-कटाव के चलते यह सिमटकर करीब 421 वर्ग किलोमीटर रह गया है। सच्चाई ये है कि माजुली दिन-प्रतिदिन सिकुड़ रहा है और इसके अस्तित्व पर सवालिया निशान लगा हुआ है।

माजुली के बारे में और भी खूब सारी बातें हैं। पर वो सब फिर कभी।

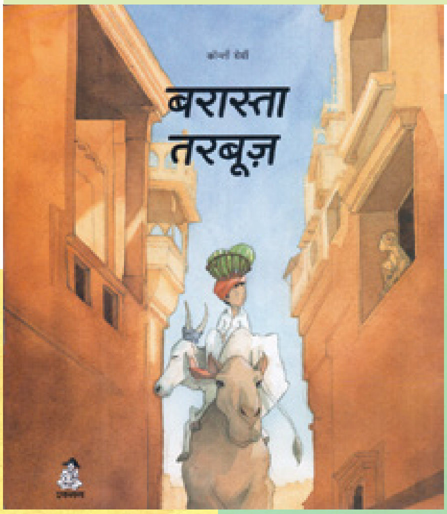

बरास्ता तरबूज़
लेखक व चित्र: कॉन्ता ग्रबा
भाषा: हिन्दी
प्रकाशक: एकलव्य फाउंडेशन
समीक्षा: उम्मेहानी शेख, सातवीं, सावित्रीबाई फुले इंग्लिश मीडियम स्कूल, मोशी, पुणे, महाराष्ट्र

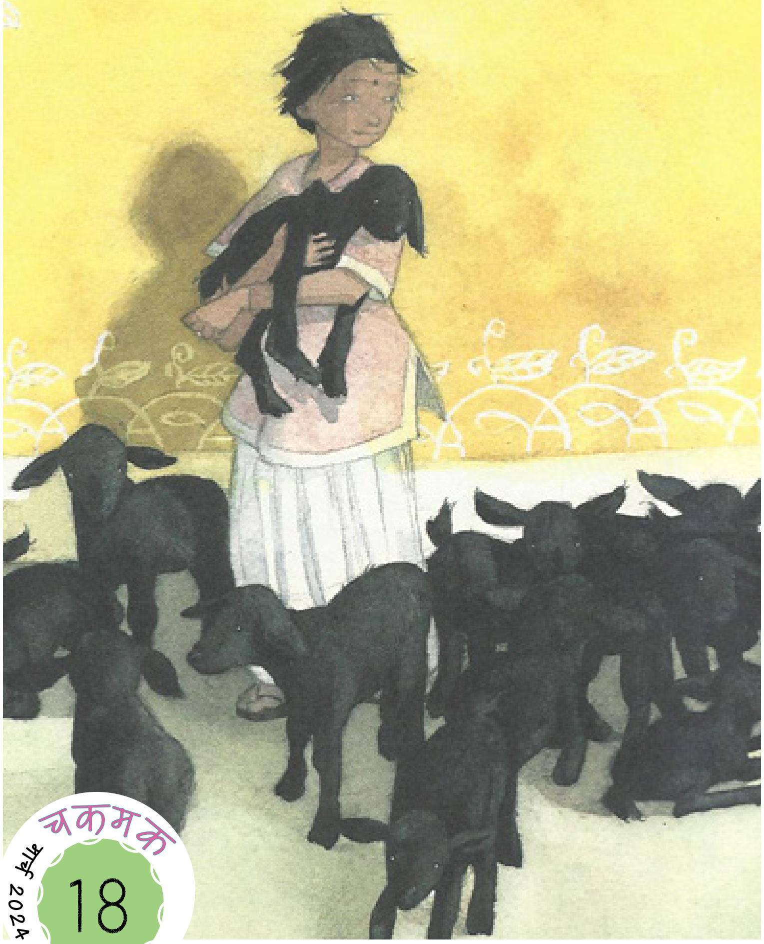

इस कहानी में सासौ अपने पिताजी के साथ बाहर गया था। उसे वहाँ एक लड़की दिखती है। सासौ को उस लड़की से प्यार हो जाता है। मुझे लगता है किसी से प्यार होना बहुत सामान्य है। हमें कभी भी किसी से भी प्यार हो सकता है। सासौ की समस्या यह थी कि वह उस लड़की का ध्यान अपनी ओर आकर्षित कैसे करे। इसलिए उसने यह तय किया कि वह उस लड़की को उपहार देगा – दस सबसे खूबसूरत तरबूज़।

कहानी में यह बात है कि लड़कियों को उपहार पसन्द होता है। पर मुझे लगता है कि लड़की हो या लड़का सभी को उपहार पसन्द होते हैं। कहानी के अन्त में जब तक सासौ लड़की के घर पहुँचता है तब तक उसके सारे तरबूज़ समाप्त हो जाते हैं। फिर भी सासौ लड़की के लिए उपहार बनाता है। मतलब सासौ अपनी परेशानी का उपाय खोजता है ना कि अपना समय बरबाद करता है।

कहानी में बहुत ज़्यादा पात्र नहीं हैं। सासौ को लड़की की पसन्द का बहुत विचार है। शायद वह लड़की से बहुत ज़्यादा प्रेम करता है। कहानी के अन्त में जब लड़की उसे चुम्मी देती है तो वह शर्म से लाल हो जाता है। वह शर्मीला भी है। मुझे लगता है कि हम जिससे प्रेम करते हैं हमें उसका खयाल होना चाहिए। सासौ बहुत अच्छा है। वह वफादार भी है क्योंकि यदि वह चाहता तो जानवरों को अकेला छोड़ देता। पर उसने अपने साथियों को नहीं छोड़ा।

रही बात लड़की की तो वह तो बहुत प्यारी है। इसलिए सासौ को वह बहुत पसन्द है। कहानी में सम्वाद नहीं हैं। सिर्फ मन की भावनाएँ व्यक्त की हैं। कहानी बहुत अच्छे क्रम में है। मुझे कहानी

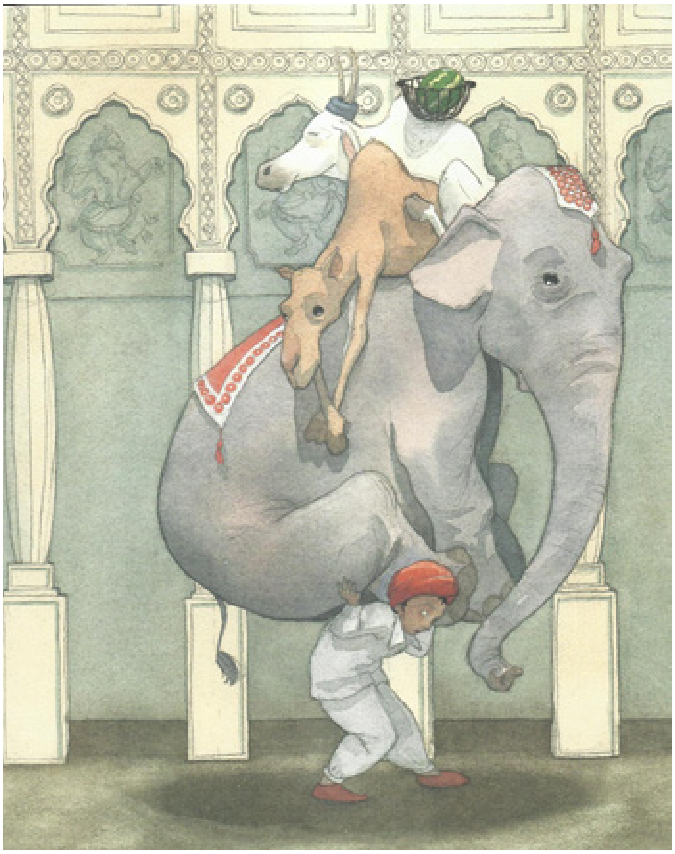

पसन्द आई। यह कहानी किशोर उम्र के बच्चों के लिए सबसे बेहतर है क्योंकि हमें किसी से भी प्रेम हो सकता है। हम जैसे-जैसे बड़े होते हैं हमें प्यार होता है।

मुझे लगता है यह कहानी बड़े काम की है। अगर हमें कोई पसन्द है तो हमें उसे बताना चाहिए और हमें उसकी राय लेनी चाहिए। प्यार होने की कोई उम्र नहीं होती। हमें कभी भी प्यार हो सकता है। और यह शर्मनाक नहीं है। बहुत सामान्य है। मुझे लगता है कि यदि लड़की थोड़ा और समय लेती तो कहानी और रोचक हो सकती थी।

पुस्तक का आकार छोटा है। मुझे छोटी किताबें पसन्द हैं। कहानी को बहुत छोटे अक्षरों में नहीं लिखा गया है। छोटे बच्चे भी इसे आसानी से पढ़ सकते हैं। भाषा हिन्दी है। मुझे हिन्दी पढ़ना आसान लगता है। मेरे हिसाब से हमारी उम्र के लिए यह एक बेहतरीन कहानी है।

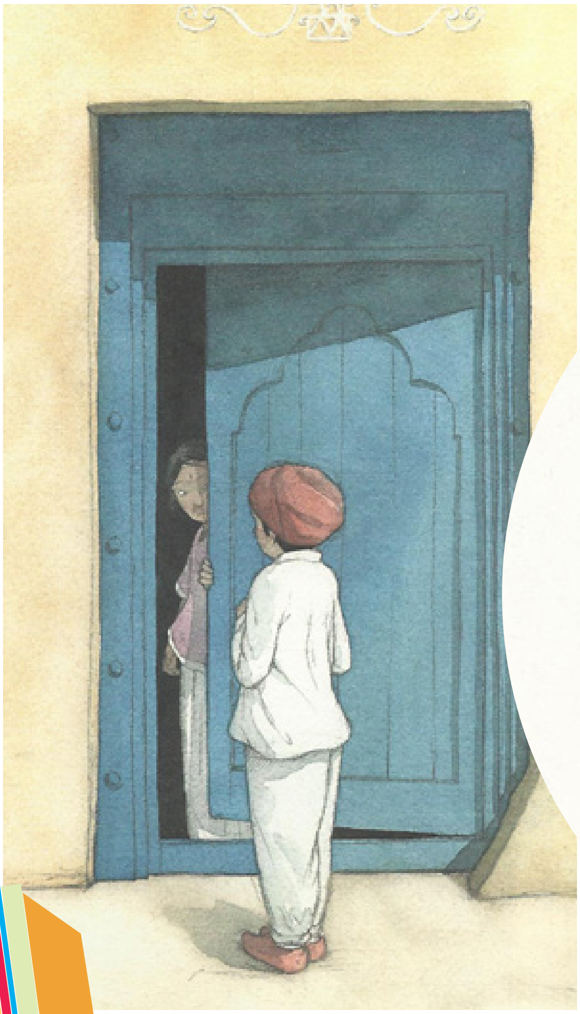

क्यों-क्यों

क्यों-क्यों में इस बार का हमारा सवाल था:

यदि तुम किसी एक ऐसी चीज़ को मुफ्त कर सकते हो जो अभी पैसे से मिलती है तो वो कौन सी चीज होती? और तुम उसे क्यों मुफ्त करना चाहते हो?

कई बच्चों ने हमें दिलचस्प जवाब भेजे हैं। इनमें से कुछ तुम यहाँ पढ़ सकते हो।

अगले अंक के लिए सवाल है:

पुरुषों की मूँछें होती हैं और महिलाओं की नहीं, ऐसा क्यों?

तुम्हारा मन करे तो तुम भी अपने जवाब हमें भेजना। जवाब तुम लिखकर या चित्र/कॉमिक बनाकर दे सकते हो।

अपने जवाब तुम हमें merapanna.chakmak@eklavya.in पर ईमेल कर सकते हो या फिर 9753011077 पर व्हॉट्सऐप भी कर सकते हो। चाहो तो डाक से भी भेज सकते हो। हमारा पता है:

चकमक

एकलव्य फाउंडेशन, जमनालाल बजाज परिसर, जाटखेड़ी,
फॉर्चून कस्तूरी के पास,
भोपाल - 462026, मध्य प्रदेश

मुझे शरारा बहुत पसन्द है। लेकिन उसकी कीमत इतनी ज़्यादा है कि मेरे पापा का बजट नहीं है कि मैं उसको खरीद सकूँ। मेरी तरह बहुत-से लोगों को शरारा जैसा सूट बहुत पसन्द होता है। इसलिए यह मुफ्त होना चाहिए।

महक, छठवीं, अपना तालीम घर, फ़ैज़ाबाद, उत्तर प्रदेश

मैं चॉकलेट मुफ्त करती क्योंकि चॉकलेट मुझे बहुत पसन्द है। मुझे जब चॉकलेट खाने का मन करता है तो पैसे ना होने की वजह से मैं चॉकलेट नहीं खा पाता हूँ। और बहुत सारे बच्चों को भी चॉकलेट खाने का मन करता है और पैसे ना होने की वजह से वह चॉकलेट खा नहीं पाते हैं। इसलिए मैं चॉकलेट मुफ्त करना चाहता हूँ ताकि जिसका भी मन हो, चाहे अमीर हो या गरीब, वह चॉकलेट खा सके।

आदर्श कुमार, चौथी, पोखरमा फाउंडेशन अकेडमी, पोखरमा, लखीसराय, बिहार

हमारे घर में गेंहूँ खतम हो जाने पर हमारे दादाजी और पापाजी बहुत परेशान हो जाते हैं। जब दोनों परेशान हो जाते हैं तो घर का माहौल बहुत चिन्ता भरा हो जाता है। इसलिए गेंहूँ मुफ्त हो जाना चाहिए ताकि मेरे घर का माहौल भी अच्छा बना रहे।

अंकिता रैकवार, छठवीं, शासकीय बजरिया स्कूल, बीना, मध्य प्रदेश

हमारे गाँव से पौड़ी का बस किराया पचास रुपए है। बहुत-से लोग एक तरफ बस से जाते हैं और दूसरी तरफ पैदल आते हैं। मैं अपने वाहन में एक आदमी को पौड़ी ले जाऊँगा। और उसके चालीस रुपए बचाना चाहूँगा।

पवन मन्द्रवाल, नौंवी, जीआईसी, केवर्स, पौड़ी गढ़वाल, उत्तराखण्ड

मैं बिजली मुफ्त करना चाहती हूँ। क्योंकि हमारे घर में बिजली का बिल भरने के पैसे नहीं होते हैं।

पावनी कच्छप, आदर्श राजीव गांधी बालिका आश्रम शाला भवन, सीतापुर, सोनतराई, छत्तीसगढ़

चित्र: कनिशा सरमाह, छठवीं, इथेरल, शिक्षान्तर स्कूल, गुरुग्राम, हरयाणा

हम गैस मुफ्त करना चाहते हैं क्योंकि इससे सबको खाना बनाने में आसानी होगी। क्योंकि अब लकड़ियाँ जल्दी मिलती नहीं है। और चूल्हे पर खाना बनाते हैं तो मम्मी लोगों की आँख में धुआँ लगता है।

उबेद, छठवीं, अर्थ समूह, स्वतंत्र तालीम, रामदुआरी सेंटर, लखनऊ, उत्तर प्रदेश

मैं चाहती हूँ कि किताबें मुफ्त कर दी जाएँ क्योंकि किताबें बहुत महँगी आती हैं। मेरी इच्छा बड़ी होकर आईएएस अधिकारी बनने की है। जिसके लिए बहुत सारी किताबें चाहिए। अगर मुफ्त में किताबें मिलें तो शायद मैं अपने सपने को साकार कर पाऊँगी।

अनुष्का, पाँचवीं, प्राथमिक विद्यालय, तरहिया, उत्तर प्रदेश

यदि मैं कोई चीज़ मुफ्त करवा पाती तो वह होती बीज क्योंकि उसी से पेड़ उगते हैं। और वही हमें जीवन देते हैं। इसलिए मैं बीज को चुनती हूँ।

अनिका पेरिवाल, चौथी, सरिस्का, शिव नाडर स्कूल, नोएडा, उत्तर प्रदेश

ऐसे बहुत-से बच्चे हैं जो उच्च स्तरीय क्रिकेट में जाना चाहते हैं परन्तु क्रिकेट एकैडमी की फीस बहुत ज़्यादा होने के कारण वहाँ तक नहीं पहुँच पाते हैं, क्योंकि उनके घरों की आर्थिक स्थिति खराब है। तो ऐसे बच्चों का सपना साकार नहीं हो पाता। मुझे लगता है कि उनको अपनी काबिलियत साबित करने का अवसर मिलना चाहिए। इसलिए मैं चाहता हूँ कि इन एकैडमी की फीस मुफ्त हो जाए।

सत्यम कुमार, छठवीं, अपना तालीम घर, फ़ैज़ाबाद, उत्तर प्रदेश

अगर मुझे ऐसा मौका मिलता तो मैं खुशियाँ मुफ्त करती। आपको लग रहा होगा कि खुशियाँ तो मुफ्त ही हैं लेकिन पूरी दुनिया और यहाँ तक कि भारत में भी ज़्यादातर लोग एक-दूसरे से नाराज़ रहते हैं। एक-दूसरे से बात नहीं करते। काश उन्हें हम जोड़ पाते, खुशी दे पाते।

रोशनी, पाँचवीं, सर्वोदय कन्या विद्यालय, दीवान हॉल, दिल्ली

चित्र: भावना कीर, पाँचवीं, मोहल्ला शिक्षा गतिविधि केन्द्र, डोंगरवाड़ा, होशंगाबाद, मध्य प्रदेश

मैं वैज्ञानिक बनूँगी और ऐसा आविष्कार करूँगी कि हवा से आटा बनाया जा सके। क्योंकि आजकल आटा बहुत मँहगा हो गया है। फिर मैं वह आविष्कार सबको बता देती।

सलोनी, नौवीं, जीआईसी, केवर्स, पौड़ी गढ़वाल, उत्तराखण्ड

हमारा गाँव ड्राई ज़ोन में है। यहाँ पानी की समस्या हमेशा रहती है। पिछली बार कलेक्टर साहब को भी इस समस्या के बारे में बताया गया था। पर अभी तक कोई कदम उठाया नहीं गया। यदि मुफ्त करने की बात है तो मैं चाहती हूँ कि नल-जल योजना को गाँव में लाएँ और कोई शुल्क ना लें क्योंकि जल ही जीवन है।

संजना एक्का, सातवीं, शासकीय पूर्व माध्यमिक शाला, परसा, सरगुजा, छत्तीसगढ़

हमें बैग फ्री में मिलना चाहिए क्योंकि कई बच्चे ऐसे भी हैं जिनके पास बैग लेने के लिए पैसे नहीं होते। पुस्तक तो हमें सरकार दे ही देती है। अब तो कॉपियाँ भी देने लगी है। लेकिन अगर बैग ही नहीं होगा तो पुस्तक-कॉपियों को किसमें लेकर जाएँगे।

चाँदनी ध्रुव, आठवीं, शासकीय माध्यमिक विद्यालय, छेरकापुर, बलौदा बाज़ार, छत्तीसगढ़

ट्रेन में जाने पर बहुत पैसा लगता है। हम सोचते हैं कि ट्रेन का टिकट मुफ्त हो जाए क्योंकि हमारे पास पैसे ना हों तो भी कम से कम ट्रेन में तो घूम सकते हैं। बहुत-से लोग होते हैं जो ट्रेन को देखते हैं पर जा नहीं पाते हैं।

शिफा खातून, सातवीं, अपना तालीम घर, फैज़ाबाद, उत्तर प्रदेश

मैं उस चीज़ को मुफ्त करूँगी जिससे किसी को नुकसान ना हो, सबकी मदद भी हो। जैसे सरकारी अस्पताल ही नहीं, बल्कि प्राइवेट अस्पताल में भी इलाज की मुफ्त सुविधा हो। और ऐसा हो रहा है या नहीं इसकी समय-समय पर जाँच भी करूँगी जिससे हर ज़रूरतमन्द व्यक्ति को इलाज मिल सके।

नन्दिनी यादव, सातवीं, शासकीय पूर्व माध्यमिक शाला, परसा, सरगुजा, छत्तीसगढ़

मैं स्ट्राबेरी चाहती हूँ लेकिन फ्री में नहीं चाहती क्योंकि फ्री की चीज़ें खराब होती हैं।

आध्या सिंह, प्लेग्रुप, किडजी स्कूल, बुलन्द शहर, उत्तर प्रदेश

(आध्या ने यह जवाब अपने पापा को बोलकर बताया था। उन्होंने इसे लिखकर भेजा है।)

मोबाइल हमें पैसे से मिलता है। मेरी और मेरे छोटे भाई की लड़ाई होती है क्योंकि हमें किसी प्रश्न का उत्तर नहीं मिलता तो हम मोबाइल से उसके बारे में पढ़ लेते हैं। मोबाइल फ्री में मिलता तो सबके पास अपना मोबाइल होता और सब अपना-अपना काम कर सकते।

बाली यादव, नौवीं, एकलव्य लर्निंग सेंटर, ग्राम पावरझण्डा, शाहपुरा, मध्य प्रदेश

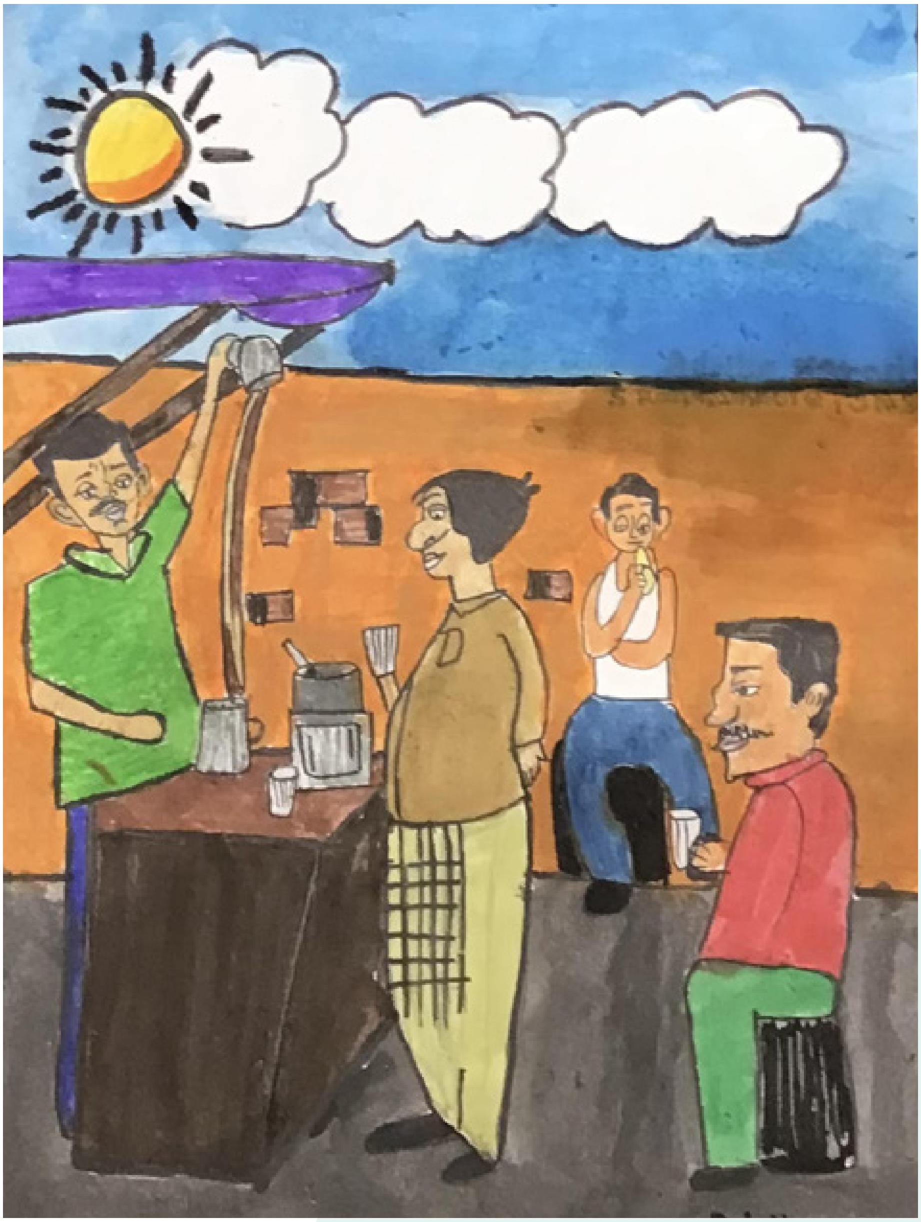

चित्र: अद्रिका कटारिया, पाँचवीं, रणथम्बोर, शिव नाडर स्कूल, नोएडा, उत्तर प्रदेश

मैं साइकिल फ्री करना चाहता हूँ क्योंकि बहुत बच्चों का सपना रहता है कि मैं साइकिल कभी चलाऊँगा। पर वह साइकिल नहीं खरीद पाते हैं।

सत्यम कुमार, चौथी, पोखरमा फाउंडेशन अकेडमी, पोखरमा, लखीसराय, बिहार

काश हम सब चीज़ मुफ्त करा सकते।

माही, पाँचवीं, सर्वोदय कन्या विद्यालय, दिल्ली

बचपन में मैं और मेरी बहन मिलकर बड़ी दिलचस्पी से मम्मी की चप्पल ढूँढते थे। दिन भर दोस्तों के साथ खेलने के बाद जब अँधेरा होने लगता तब ही हम घर की ओर बढ़ते थे। घर पहुँचते ही मेरी बहन की आँखें मम्मी को खोजने लगतीं, “अपा, अनू यहाय चंग?” (पापा, मम्मी कहाँ हैं?)। पापा कहते, “न्यों नव ड़ा न्यामो बी हि मानयुमा अंसव दोनय का थईकलो।” (तुम्हारी माँ तो ‘किसी के घर बैठकर आती हूँ’ ऐसा कहकर चली गई।) फिर पापा कहते, “समाय अखै वा, फून ती नोकाचा, बन-बन मंग” (बेटी आकर दरवाज़ा बन्द कर दो, हवा चल रही है)। दरवाज़ा बन्द करने के बाद खाना खाकर हम दोनों टॉर्च लिए जल्दी-जल्दी मम्मी को ढूँढने निकल पड़ते।

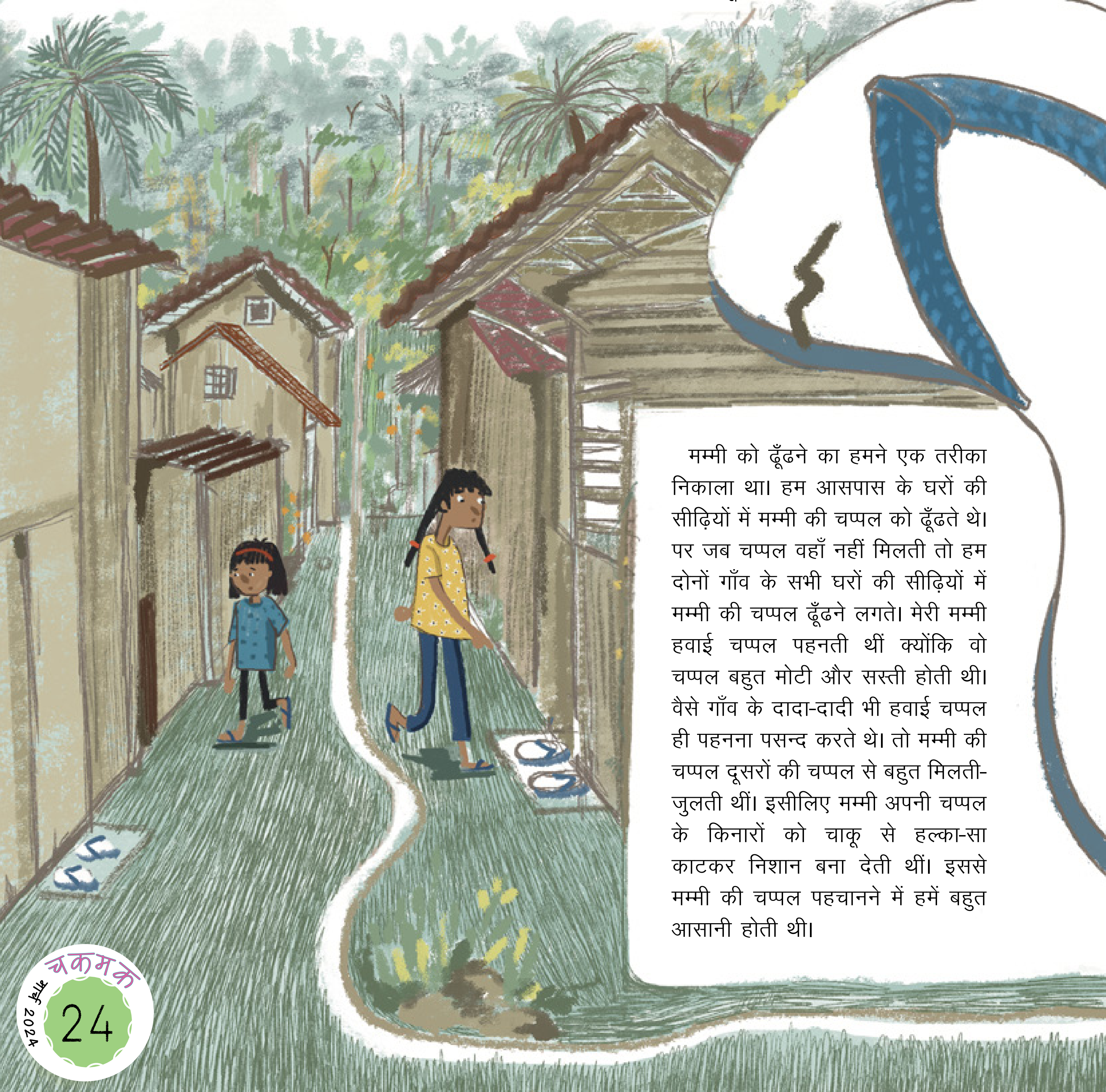

मम्मी को ढूँढने का हमने एक तरीका निकाला था। हम आसपास के घरों की सीढ़ियों में मम्मी की चप्पल को ढूँढते थे। पर जब चप्पल वहाँ नहीं मिलती तो हम दोनों गाँव के सभी घरों की सीढ़ियों में मम्मी की चप्पल ढूँढने लगते। मेरी मम्मी हवाई चप्पल पहनती थीं क्योंकि वो चप्पल बहुत मोटी और सस्ती होती थी। वैसे गाँव के दादा-दादी भी हवाई चप्पल ही पहनना पसन्द करते थे। तो मम्मी की चप्पल दूसरों की चप्पल से बहुत मिलती-जुलती थीं। इसीलिए मम्मी अपनी चप्पल के किनारों को चाकू से हल्का-सा काटकर निशान बना देती थीं। इससे मम्मी की चप्पल पहचानने में हमें बहुत आसानी होती थी।

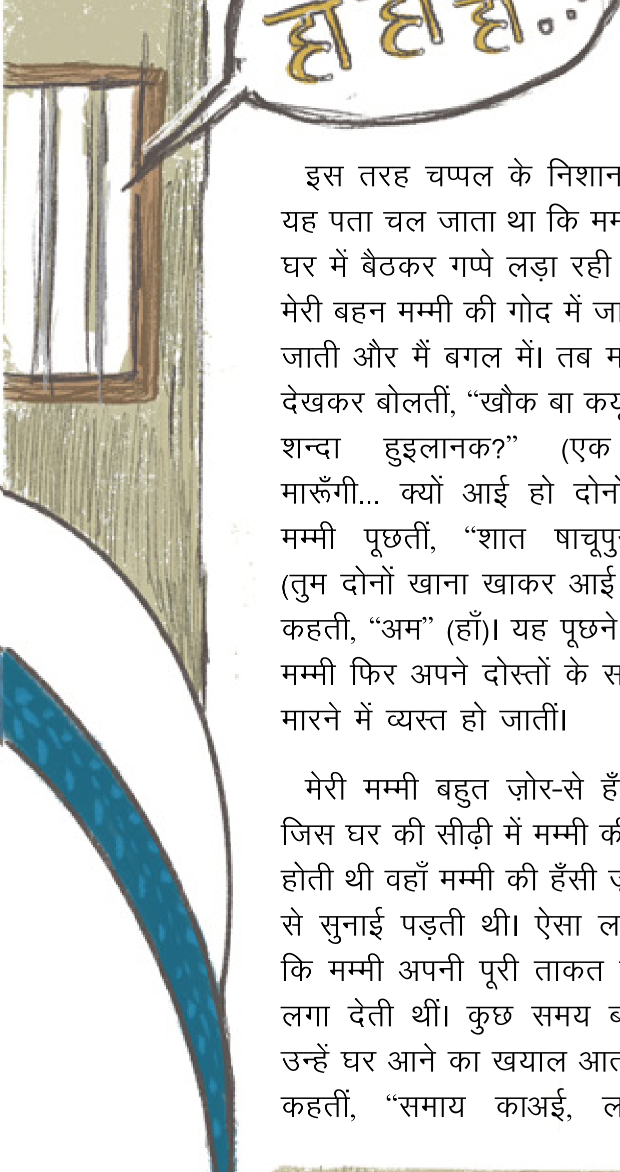

इस तरह चप्पल के निशान से हमें यह पता चल जाता था कि मम्मी किस घर में बैठकर गप्पे लड़ा रही हैं। फिर मेरी बहन मम्मी की गोद में जाकर बैठ जाती और मैं बगल में। तब मम्मी हमें देखकर बोलतीं, “खौक बा कयूमनक... शन्दा हुइलानक?” (एक कोक मारूँगी... क्यों आई हो दोनों)। फिर मम्मी पूछतीं, “शात षाचूपुनंगला?” (तुम दोनों खाना खाकर आई हो?) मैं कहती, “अम” (हाँ)। यह पूछने के बाद मम्मी फिर अपने दोस्तों के साथ गप्पे मारने में व्यस्त हो जातीं।

मेरी मम्मी बहुत ज़ोर-से हँसती हैं। जिस घर की सीढ़ी में मम्मी की चप्पल होती थी वहाँ मम्मी की हँसी ज़ोर-ज़ोर से सुनाई पड़ती थी। ऐसा लगता था कि मम्मी अपनी पूरी ताकत हँसने में लगा देती थीं। कुछ समय बाद जब उन्हें घर आने का खयाल आता तो वो कहतीं, “समाय काअई, लोगशूनंग बीहीं ताइना लोंगयई” (बेटी जल्दी-से खड़े हो जाओ, घर जाना है) तब तक तो बहन सो चुकी होती थी और माँ उसे पीठ में उठाकर घर ले जाती थीं। और मैं मम्मी के आगे टॉर्च पकड़कर चलती थी।

असीन्ला क्रोन्ग, ग्यारहवीं, बैम्बूसा लाइब्रेरी, तेजू, अरुणाचल प्रदेश
इस कहानी में डायलॉग कमान मिश्मी भाषा में लिखे गए हैं।

कहाँ है मम्मी की चप्पल?

असीन्ला क्रोन्ग
चित्र: प्रभाकर डबराल

1. समान रंग के बिन्दुओं को इस तरह जोड़ो कि तुम्हारी लाइनें एक-दूसरे को काटें नहीं। कैसे करोगे?

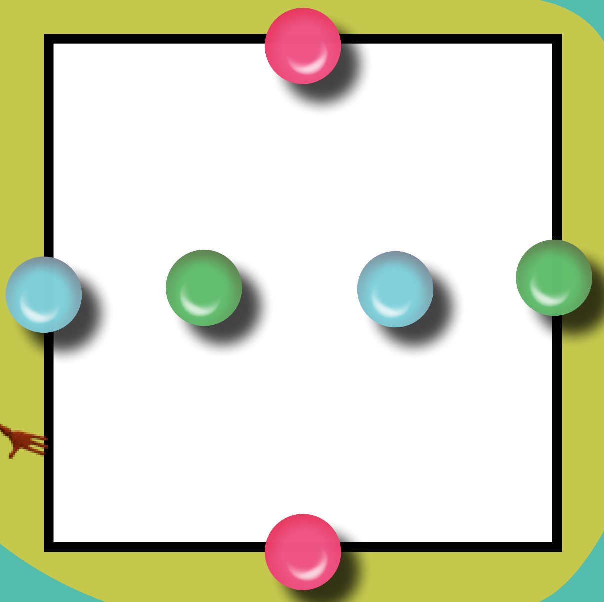

2. तीन चींटियाँ एक ही दिशा में जा रही हैं। पहली चींटी के पीछे दो चींटियाँ हैं। दूसरी चींटी के आगे एक चींटी है और पीछे एक चींटी है। तीसरी चींटी के आगे-पीछे भी एक-एक चींटी है। यदि वहाँ केवल 3 ही चींटियाँ हैं तो ऐसा कैसे हो सकता है?

3. प्रश्न चिह्न वाली जगह में कौन-सी संख्या आएगी?

6			
7	5		
11	3	?	
17	2	4	1

4. तीन बच्चों को बराबर-बराबर टॉफियाँ मिलीं। तीनों ने अपने-अपने हिस्से की छह टॉफियाँ खा लीं। अब तीनों के पास मिलाकर उतनी टॉफियाँ हैं जितनी कि बाँटने के बाद हरेक के पास थी। बताओ कि कुल कितनी टॉफियाँ बाँटी गईं?

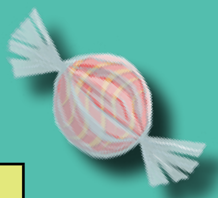

5. एलीना और सैम में से एक हमेशा सोमवार, बुधवार और शुक्रवार को झूठ बोलता है और दूसरा मंगलवार, गुरुवार और शनिवार को। बाकी के दिन वो सच बोलते हैं। एक दिन उनके बीच यह बातचीत होती है:

- आज रविवार है। मेरा नाम एलीना है।
- आज गुरुवार है। मेरा नाम सैम है।

इस बातचीत के आधार पर बताओ कि उस दिन कौन-सा वार था?

6. दी गई ग्रिड में कई सारी नदियों के नाम छिपे हुए हैं। तुमने कितने ढूँढे?

ता	प्ती	कृ	य	सो	को	घा	घ	रा
हु	ग	ली	ष्णा	मु	न	सी	पा	वी
मा	सा	चं	पा	म	हा	न	दी	का
चि	ना	ब	ह्म	पु	त्र	र्म	दी	वे
ता	नू	ल	र	ना	गो	दा	व	री
स	क	झे	ल	म	म	बे	सु	तुं
त	र	गं	गा	य	ती	त	म	ग
लु	मि	यू	ड	दा	मु	वा	रा	भ
ज	सी	सिं	धु	क	बी	ना	म	द्रा

माथापच्ची

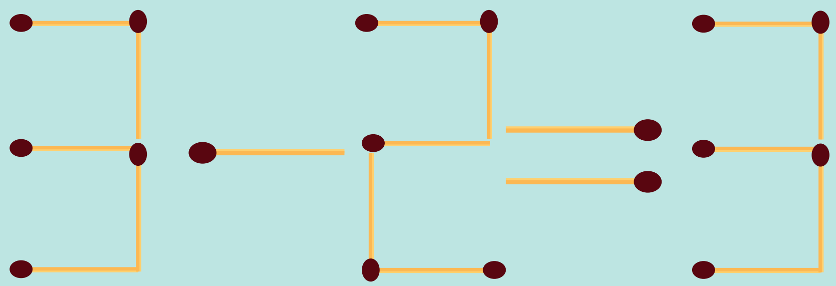

7. केवल एक तीली को इधर-उधर करके तुम्हें इस समीकरण को सही करना है। कैसे करोगे?

8. टॉम अंकल की 4 बेटियाँ हैं। हर बहन का एक भाई है। तो बताओ टॉम अंकल के कितने बच्चे हैं?

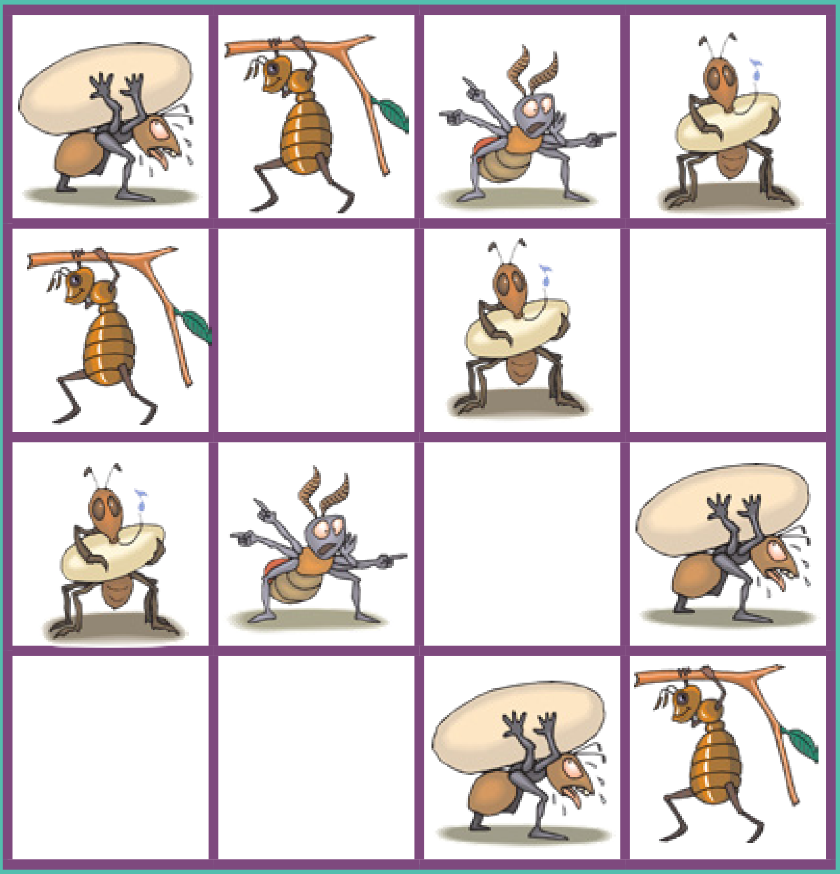

9. दी गई ग्रिड की हर पंक्ति व हर कॉलम में अलग-अलग कीड़ा आना चाहिए। इस शर्त के आधार पर खाली जगहों में कौन-सा कीड़ा आएगा?

फटाफट बताओ

रहे जेब में पाँव पसार
हाथ रहे यह बारम्बार
करवाता अपनों से बात
साँझ-सवेरा हो या दिन-रात

(मोबाइल)

लकड़ी, तेल न कोई गैस
बचाऊँ मैं सबका कैश
मैं हूँ चूल्हा अजब अनूप
मुझे चाहिए केवल धूप

(सोलर कुकर)

कौन-सा कागज़ है जिसे
पढ़ने-लिखने के लिए
इस्तेमाल नहीं किया जा
सकता?

(कांच कागज़)

सरपट दौड़े हाथ ना आए
कोई उसका नाम बताए

(सड़क)

उल्टा होकर राह दिखाता
सीधे होकर रंग बताता

(हरा)

नींद में मिलूँ, जागने पर नहीं
दूध में मिलूँ, पानी में नहीं
दादी में मिलूँ, नानी में नहीं
गेंद में मिलूँ, बल्ले में नहीं

('द' अक्षर)

शुरू की दोनों पहेलियाँ शासकीय प्राथमिक विद्यालय लमती के शिक्षक कन्हैया साहू 'अमित' द्वारा रचित हैं।

जवाब पेज 42 पर

तेरी संख्या... मुझे पता है!
आलोका कान्हेरे
अनुवाद: कविता तिवारी, चित्र: मधुश्री
गणित है मज़ेदार
गणित का जादू
मैं एक जादू जानता हूँ।
अच्छा! दिखा, दिखा!
तू 1 से 100 के बीच की कोई भी एक संख्या सोच। फिर मैं तुझे उस संख्या के साथ कुछ गणित करने को कहूँगा।
और अन्त में तुझे जो संख्या मिलेगी, वो मैं दिखाऊँगा।
संख्या दिखाएगा? मतलब?
मतलब मैं तुझे उस संख्या के बराबर उँगलियाँ दिखाऊँगा जो तूने चुनी थी।
ओह! तो, चल फिर शुरू करते हैं।
तो तू फटाफट एक संख्या सोच ले।
10
सोच ली।

उसे **दुगुना** कर ले।
10 + 10 = 20
जो संख्या मिली उसमें **9 जोड़**।
20 + 9 = 29
इस नई संख्या में से **3 घटा ले**।
29 - 3 = 26
फिर जो संख्या मिली, उसे **2 से भाग दे**।
26 ÷ 2 = 13
अब इस नई संख्या में से **उस संख्या को घटा दे जो तूने चुनी थी**।
13 - 10 = 3
ये है बची संख्या। है ना?
!!
वाह! ये तूने कैसे पता किया?
यही तो है जादू!
तू कोई भी संख्या सोच, मैं अन्त में बची हुई संख्या तुझे बता सकता हूँ।
पर कैसे?

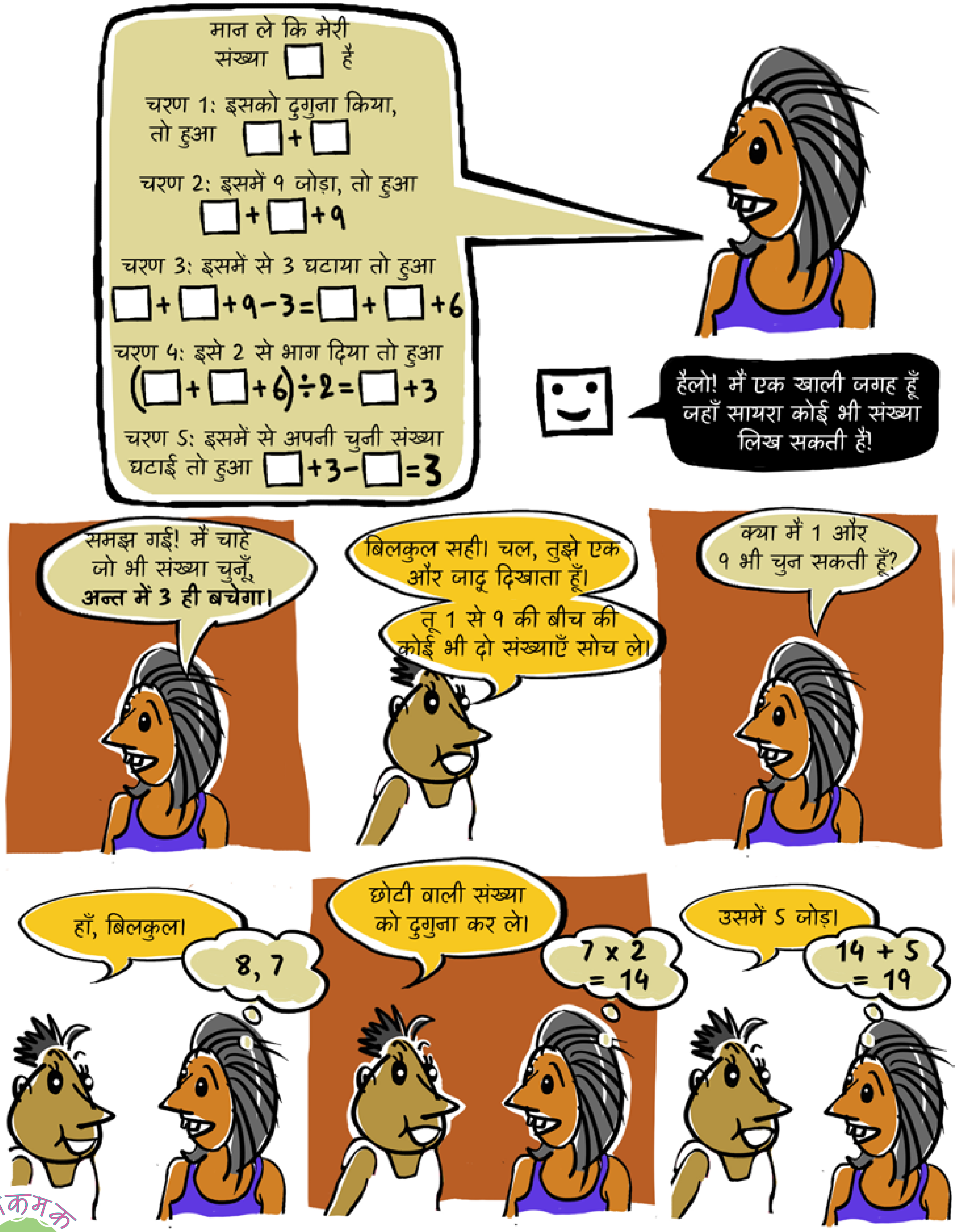
मान ले कि मेरी
संख्या □ है
चरण 1: इसको दुगुना किया,
तो हुआ □+□
चरण 2: इसमें 9 जोड़ा, तो हुआ
□+□+9
चरण 3: इसमें से 3 घटाया तो हुआ
□+□+9−3=□+□+6
चरण 4: इसे 2 से भाग दिया तो हुआ
(□+□+6)÷2=□+3
चरण 5: इसमें से अपनी चुनी संख्या
घटाई तो हुआ □+3−□=3
हैलो! मैं एक खाली जगह हूँ जहाँ सायरा कोई भी संख्या लिख सकती है!
समझ गई! मैं चाहे जो भी संख्या चुनूँ, **अन्त में 3 ही बचेगा।**
बिलकुल सही। चल, तुझे एक और जादू दिखाता हूँ।
तू 1 से 9 की बीच की कोई भी दो संख्याएँ सोच ले।
क्या मैं 1 और 9 भी चुन सकती हूँ?
हाँ, बिलकुल।
8, 7
छोटी वाली संख्या को दुगुना कर ले।
7 x 2 = 14
उसमें 5 जोड़।
14 + 5 = 19

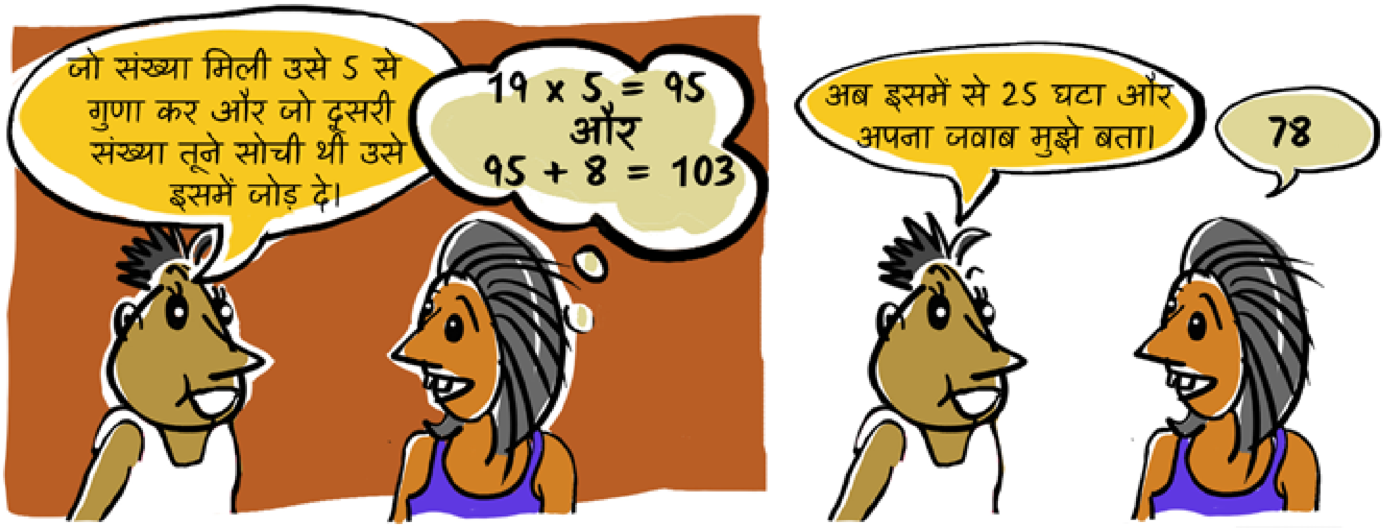

जादू के पीछे गणित का जादू	
1 से 9 के बीच की कोई 2 संख्याएँ लें	A, B
छोटी संख्या को दुगुना करें	2A
उसमें 5 जोड़ें	2A+5
नई संख्या को 5 से गुणा करें	10A+25
अब अपनी दूसरी संख्या को जोड़ें	10A+25+B
25 घटाएँ	**10A+B**

तुम्हें भी ऐसे जादू आते हों तो हमें ज़रूर लिखना।
अगले अंक में हम कुछ नया जादू करेंगे।

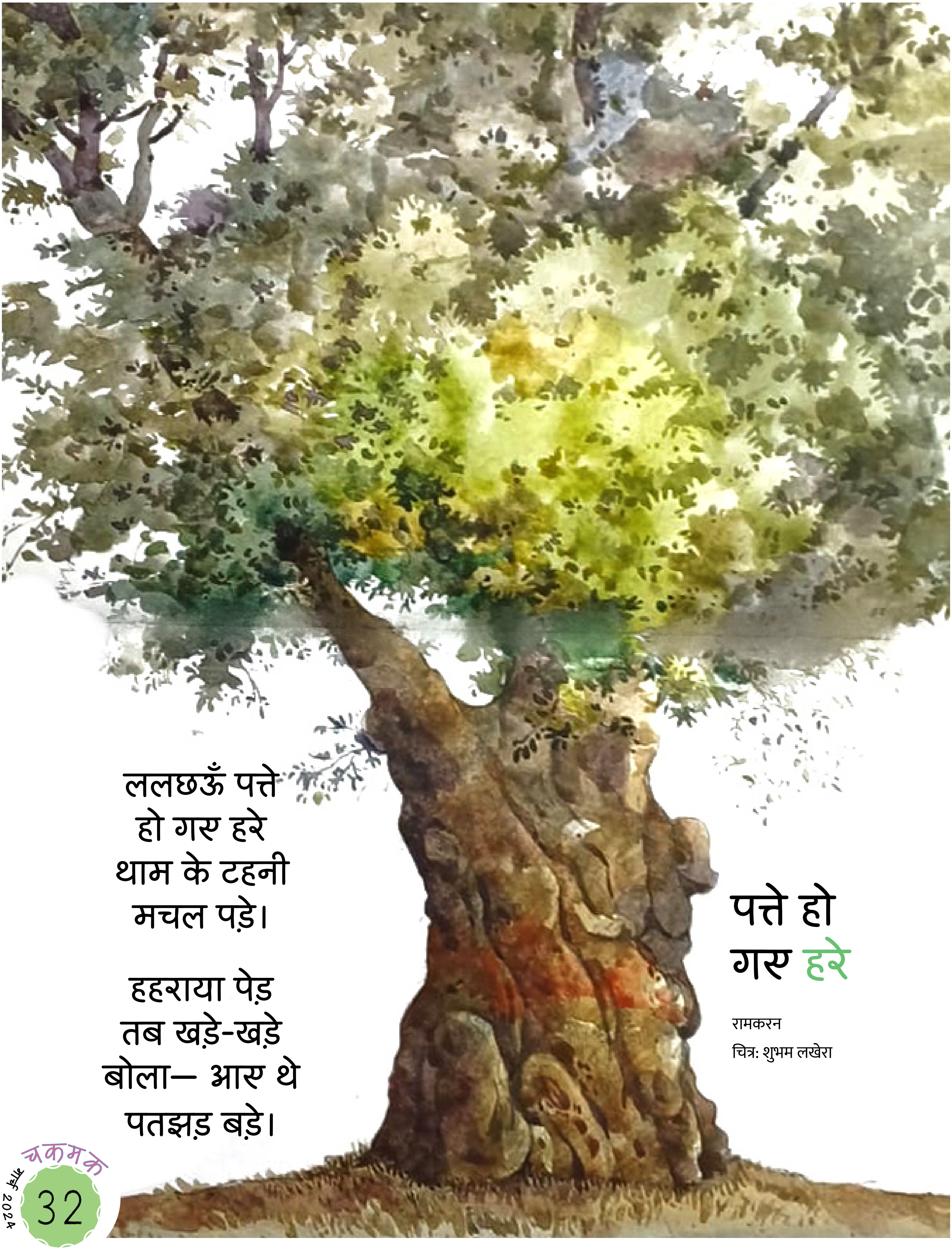

पत्ते हो गए हरे

रामकरन

चित्र: शुभम लखेरा

ललछऊँ पत्ते
हो गए हरे
थाम के टहनी
मचल पड़े।

हहराया पेड़
तब खड़े-खड़े
बोला– आए थे
पतझड़ बड़े।

UNITED STATES OF AMERICA
FIVE CENTS

सुडोकू 73

दिए हुए बॉक्स में 1 से 9 तक के अंक भरने हैं। आसान लग रहा है ना? पर ये अंक ऐसे ही नहीं भरने हैं। अंक भरते समय तुम्हें यह ध्यान रखना है कि 1 से 9 तक के अंक एक ही पंक्ति और स्तम्भ में दोहराए ना जाएँ। साथ ही साथ, गुलाबी लाइन से बने बॉक्स में तुमको नौ डब्बे दिख रहे होंगे। ध्यान रहे कि हर गुलाबी बॉक्स में भी 1 से 9 तक के अंक दुबारा ना आएँ। कठिन भी नहीं है, करके तो देखो।

4				8			9	3
				4	3		2	
								7
						7		4
6			5	9		3	1	
	3		4		1	8		9
				6	2			1
			8	5	7	9	3	
	8	6	1	3		2		5

चित्र पहेली

बाएँ से दाएँ

ऊपर से नीचे

जवाब पेज 42 पर

मेरा पन्ना

रणथम्भौर का बाघ

माहिर सिंह
आठवीं
प्रोमेथियस स्कूल, नोएडा, उत्तर प्रदेश

मैं अपने परिवार और दोस्तों के साथ रणथम्भौर गया था। रणथम्भौर के जंगलों में बाघ और अन्य जंगली जानवर होते हैं। वह इसी के लिए जाना जाता है। हमें वहाँ पहुँचने में 6 घण्टे लगे। पहुँचते ही मैं और मेरे दोस्त खेलने लग गए। हम वहाँ बाघ देखने की उम्मीद में गए थे।

अगली सुबह हम सफारी के लिए निकल गए। हमें मगरमच्छ, हिरण, सूअर और कई जानवर दिखाई दिए। पर हमें उस दिन निराश होकर वापस आना पड़ा क्योंकि हमें बाघ नहीं दिखा।

अगले दिन हम फिर से सफारी के लिए गए। इस बार हमें बाघ के पैर के निशान दिखे। सुबह से शाम हो गई लेकिन हमें बाघ नहीं दिखा। यह हमारा आखिरी दिन था। पर हम सबने अपने मम्मी-पापा को एक और दिन रुकने के लिए मना लिया था।

अगले दिन बाघ देखने की आखिरी उम्मीद थी। इस बार हम जैसे ही सफारी के लिए जंगल में घुसे कि सामने वाली जीप ने इशारा किया। वहाँ सामने एक बहुत बड़ा बाघ था। हमने जैसे ही जीप आगे की वह हमारे पीछे भागने लग गया और हमारे ऊपर दहाड़ा भी। हम उस समय बहुत डर गए थे।

चित्र: इशिका पटेल, आठवीं, स्कॉलर्स एकैडमी, देवास, मध्य प्रदेश

यह बहुत ही मज़ेदार और डरावनी घटना थी। यह घटना अगले दिन अखबार और न्यूज़ में भी आई। बाघ मेरा पसन्दीदा जानवर है और उसे ऐसे जंगल में खुले में देखना बहुत ही मज़ेदार अनुभव था। हमने पहली दो सफारी में बाघ नहीं देखा था पर हमने उम्मीद नहीं हारी थी। हमारी किस्मत अच्छी थी जो हमें इतनी मज़ेदार घटना देखने को मिली।

चित्र: देवांश, छठवीं, अज़ीम प्रेमजी स्कूल, मातली, उत्तरकाशी, उत्तराखण्ड

बबूल का वह पेड़

पूर्वी लोवंशी
तीसरी, लारी प्रोजेक्ट
ग्राम खानगाँव, मण्डीदीप, रायसेन, मध्य प्रदेश

मेरी दोस्त का नाम पूजा है। उसने और मैंने एक पेड़ लगाया है। उसका नाम बबूल है। वह पेड़ आज हमारे बहुत काम आ रहा है। जब हम दोनों आँगन में जाते थे तब बच्चे धूप में खेलते थे। तभी हम दोनों ने पेड़ लगाने के लिए सोचा।

खेत

मंजू जोशी
छठवीं, राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय
बड़ाबे, मूनाकोट, पिथौरागढ़ उत्तराखण्ड

वह खेत जो हरे-भरे रंग का है
जब वह सूख जाता है
तो सूना-सूना लगता है
वह जब अन्न से भरा होता है
तो अच्छा लगता है
मैं हूँ खेत
मुझे फसल से बहुत प्यार है

चित्र: अनुष्का कुमारी, आठवीं, बैम्बूसा लाइब्रेरी, तेज़ू, अरुणाचल प्रदेश

सोहन की बकरी

तरुण चन्द
तीसरी, राजकीय प्राथमिक विद्यालय
किल्ल, मूनाकोट, पिथौरागढ़, उत्तराखण्ड

श्यामपुर नामक एक गाँव था। वहाँ एक पहाड़ी पर एक शेर रहता था। वो बहुत आलसी था। सोहन को शेर खाना चाहता था। एक दिन सोहन बकरी चराने पहाड़ी पर गया। शेर ने सोहन को देख लिया। शेर ने सोहन की बकरी को खा लिया। पर सोहन बच गया, खतम कहानी।

चित्र: सिद्धार्थ उइके, तीसरी, एकलव्य लर्निंग सेंटर, ग्राम भौंराढाना, शाहपुर, मध्य प्रदेश

इमारतों का जंगल

अनन्या आनन्द
सातवीं, जयपुर, राजस्थान

आजकल वन कट रहे हैं और इनकी जगह पर इमारतों के जंगल बढ़ रहे हैं। इन जंगलों में रहने वाले पशु-पक्षी हैं – कुत्ते, बिल्ली, सूअर, चूहा, बन्दर आदि। बहती नदी के साफ पानी की जगह गन्दे नालों के पानी ने ले ली है। मिट्टी के ढेर की जगह अब कूड़े के ढेर ने ले ली है। हर जगह इमारतें ही दिखती हैं। हवा भी दूषित हो रही है।

इधर-उधर देखती हूँ तो ऐसा लगता है कि मेरे चारों तरफ मकान ही मकान हैं। और मैं इन मकानों के बीच कहीं फँस गई हूँ। मम्मी-नानी कहते हैं कि जब वो छोटे थे तब बहुत हरियाली थी। ये बड़े-बड़े मकान नहीं थे। ये गाड़ियाँ भी नहीं थीं। ये सब अभी आया है, कुछ सालों पहले।

अब मैं सोचती हूँ कितना अच्छा था उनका जीवन। कितना अलग था हमारे बचपन से। इमारतों के इस जंगल में रहकर तो यही लगता है कि इससे अच्छा तो पुराने लोगों की तरह जंगल में ही रह लेते। अब मुझे यह लगता है कि क्या हम सच में विकसित हुए?

दोस्तों से शर्त

अंकित कुमार
चौथी, पोखरामा फाउंडेशन अकेडमी
पोखरामा, लखीसराय, बिहार

कुछ साल पहले की बात है। मैं तब लगभग सात साल का था। मैं और मेरा भाई एक दोस्त के घर गए। मेरे सारे दोस्त उसी के घर पर थे। हम लोग आपस में बातें कर रहे थे।

फिर मेरे सारे दोस्त और मेरा भाई सूर्य मन्दिर की ओर चले गए। मैं घर आकर अपनी चचेरी बहन के साथ कैरम खेलने लगा। तभी मेरे दरवाज़े पर खटखट हुई। मैं दौड़कर दरवाज़ा खोलने गया। दरवाज़े पर मेरा भाई और एक पड़ोसी थे। पड़ोसी ने कहा, “आपका बेटा शिवगंगा में डूबने लगा था। मैं अपने खेत से दौड़कर गया और उसे बाहर निकाला।” मम्मी यह बात सुनकर रोने लगीं। मैंने भैया को सर पोंछने के लिए तौलिया दिया।

फिर पड़ोसी अपने घर चले गए। मम्मी ने भैया से पूछा, “कपड़ा तो गीला नहीं है तुम्हारा?” भैया ने कहा, “पैंट-शर्ट उतारकर गए थे।” मम्मी ने पापा को फोन करके कहा, “घर पर एक डॉक्टर को भेजिए।” पापा ने पूछा, “क्यों?” मम्मी ने कहा, “बेटा शिवगंगा में डूब गया था।” डॉक्टर घर आकर भैया को इंजेक्शन लगाकर चला गया।

भैया को कमज़ोरी महसूस हो रही थी। इसलिए वो अपने कमरे में जाकर सो गया। भैया शाम को उठा तो मम्मी ने पूछा, “मन ठीक है तुम्हारा?” भैया ने सिर हिलाते हुए कहा, “हाँ।” मम्मी ने भैया से पूछा, “तुम डूब कैसे गए?” भैया ने कहा, “मैंने अपने सारे दोस्तों से शर्त लगाई थी कि कन्धे तक पानी में सबसे ज़्यादा देर तक कौन रहता है।” यह सुनकर मैं और मम्मी हँसने लगे।

चित्र: मानसी निनौरिया, आठवीं, लारी प्रोजेक्ट, ग्राम इटाया कलां, मण्डीदीप, रायसेन, मध्य प्रदेश

मेरी प्रिय दोस्त

अपर्णा शर्मा
आठवीं
माध्यमिक विद्यालय
मल्टीपरपज़ अम्बिकापुर,
सरगुजा, छत्तीसगढ़

मेरी प्रिय दोस्त सौम्या है। वह बहुत अच्छी है। वह मेरी सबसे पहली दोस्त है। वह पढ़ने-लिखने में भी अच्छी है। जब मुझे कोई सवाल समझ नहीं आता है तो वह समझाती है। ज़रूरत पड़ने पर कोई सहायता करे ना करे वह ज़रूर करती है।

जो बात हम किसी से नहीं कह पाते वो बात हम अपनी दोस्त को बताते हैं। जब हम किसी बात से गुस्सा हो जाते हैं या दुखी रहते हैं तो वह मुझे हँसाने के लिए गाना गाती है, चुटकुले सुनाती है और हँसी मज़ाक करती है।

स्कूल में मेरी और भी कई सहेलियाँ हैं, लेकिन उसके जैसी कोई नहीं है। हम दोनों साथ-साथ पढ़ते और खेलते हैं। हम दोस्त के बिना बिलकुल खुश नहीं रह सकते क्योंकि दुनिया में उसके जैसी प्रिय कोई नहीं है।

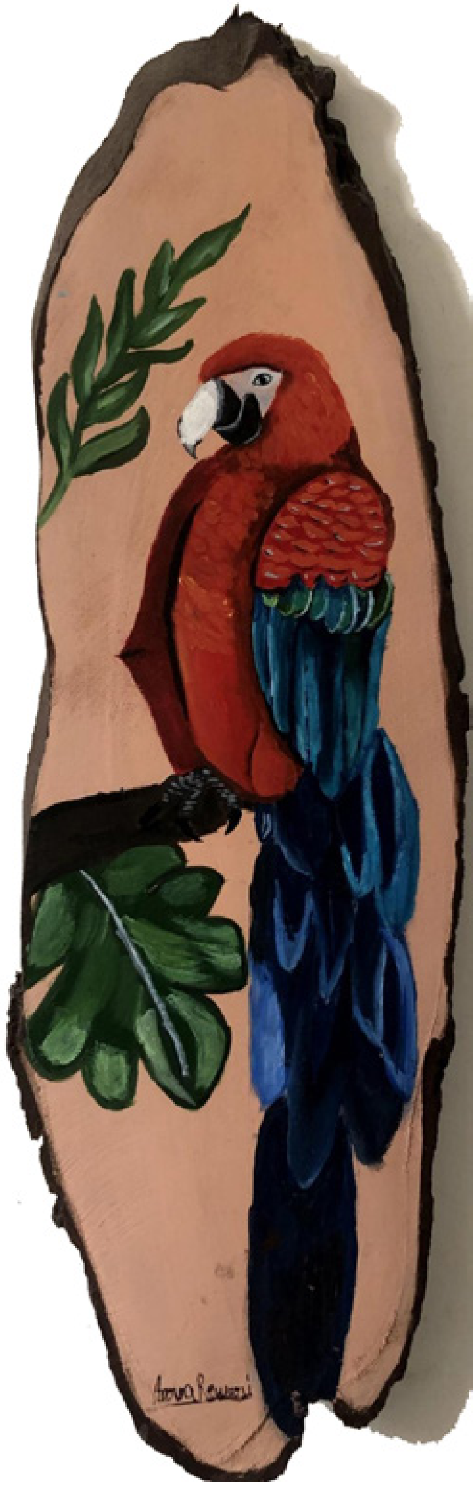

मेरी पेंटिंग

अरना
पाँचवीं, कार्बेट, शिव नाडर स्कूल
नोएडा, उत्तर प्रदेश

यह तोता मैंने एक्रेलिक पेंट का उपयोग करके बनाया है। सबसे पहले मैंने एक तोता बनाया। फिर मैंने पत्ते बनाए। फिर उसे पेंट कर दिया। मैंने यह पेंटिंग इसलिए बनाई क्योंकि मुझे पक्षी का चित्र बनाने में बहुत मज़ा आता है।

चित्र: काजल साहू, पाँचवीं, अज़ीम प्रेमजी स्कूल, धमतरी, छत्तीसगढ़

माथापच्ची जवाब

1.

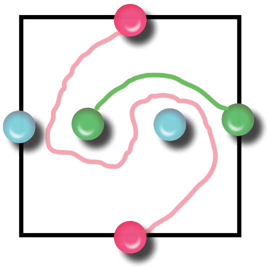

2.

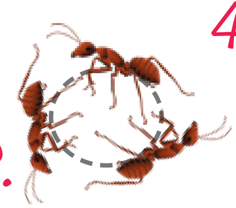

चींटियाँ गोलाकार रास्ते पर जा रही थीं।

3. चित्र की पंक्तियों में लिखी संख्याओं को जोड़ने पर 6 का पहाड़ा मिलता है। कुछ इस तरह:

6

7 + 5 = 12

17 + 2 + 4 + 1 = 24

इसलिए, 11 + 3 + 4 = 18

4. चूँकि तीनों बच्चों को बराबर संख्या में टॉफियाँ मिली थीं, इसलिए मान लो कि हरेक बच्चे को x टॉफियाँ मिली थीं। तीनों ने अपने हिस्से की 6 टॉफियाँ खा लीं तो हरेक पास x - 6 टॉफियाँ बचीं। दिया है कि तीनों के पास कुल मिलाकर उतनी ही टॉफियाँ बचीं, जितनी कि शुरुआत में उन्हें मिली थीं, इसलिए

$(x - 6) + (x - 6) + (x - 6) = x$

$3x - 18 = x$

$2x = 18$

$x = 9$

यानी शुरू में हरेक को 9 टॉफियाँ मिली थीं।

5. सवाल से पता चलता है कि रविवार को दोनों सच बोलते हैं और बाकी के दिन एक झूठ बोलता है दूसरा सच। यदि उस दिन वाकई में रविवार होता है तो दोनों कहते कि आज रविवार है। इसका मतलब है एलीना झूठ बोल रही है। और जिस दिन एलीना झूठ बोलती है उस दिन सैम सच बोलता है, यानी कि उस दिन गुरुवार था।

6.

ता	प्ती	कृ	य	सो	को	घा	घ	रा
हु	ग	ली	ष्णा	मु	न	सी	पा	वी
मा	सा	चं	पा	म	हा	न	दी	का
चि	ना	ब	ह्म	पु	त्र	र्म	दी	वे
ता	नू	ल	र	ना	गो	दा	व	री
स	क	झे	ल	म	म	बे	सु	तुं
त	र	गं	गा	य	ती	त	म	ग
लु	मि	यू	ड	दा	मु	वा	रा	भ
ज	सी	सिं	धु	क	बी	ना	म	द्रा

7.

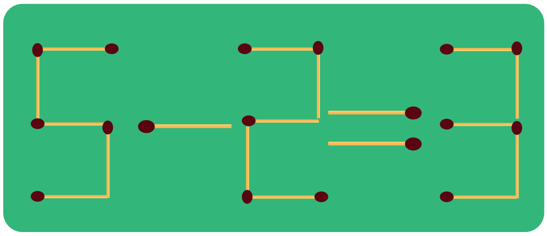

8. 5, क्योंकि 4 बेटियाँ हैं और हर बहन का एक ही भाई है यानी कि टॉम अंकल का 1 ही बेटा है।

9.

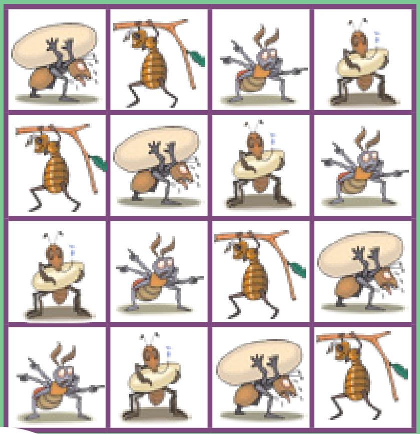

इस अंक की चित्रपहेली का जवाब

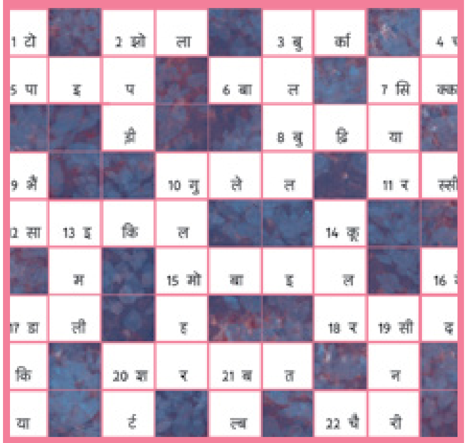

सुडोकू-73 का जवाब

4	6	2	7	8	5	1	9	3
7	9	1	6	4	3	5	2	8
3	5	8	2	1	9	6	4	7
8	1	9	3	2	6	7	5	4
6	4	7	5	9	8	3	1	2
2	3	5	4	7	1	8	6	9
5	7	3	9	6	2	4	8	1
1	2	4	8	5	7	9	3	6
9	8	6	1	3	4	2	7	5

तुम भी जानो

तुम्हारे मुँह में बसा है एक ईकोसिस्टम

तुमने शायद ये नहीं सोचा होगा कि हमारे मुँह में कोई ईकोसिस्टम है। लेकिन हमारे मुँह में हज़ारों सूक्ष्मजीव होते हैं। इन सूक्ष्मजीवों में 700 के आसपास बैक्टीरिया के साथ-साथ फफूँद और वायरस भी शामिल हैं। इनमें से एक समूह की बनावट सिर्फ हमारे मुँह में पाई जाती है और बहुत कम बदलती है। जबकि एक अन्य समूह के किरदार परिस्थितियों के साथ बदलते रहते हैं।

शोध से पता चला है कि मुँह के इस माइक्रोबायोम को स्वस्थ रखने से हम कई बीमारियों को दूर रख सकते हैं– सिर्फ दाँतों और मसूढ़ों की ही नहीं, दिल और दिमाग की भी। लेकिन इसके लिए सिर्फ पौष्टिक भोजन और दाँतों की सफाई पर्याप्त नहीं हैं। इसमें हमारी मदद के लिए कुछ टीके भी तैयार किए जा रहे हैं।

गेम खिलाड़ियों के कानों को नुकसान

जो लोग ऊँची आवाज़ में कई घण्टों तक लगातार गेम खेलते हैं, उनके सुनने की क्षमता प्रभावित हो सकती है। उन्हें कान बजने और कम सुनने की परेशानी हो सकती है, वो भी हमेशा के लिए। ध्वनि को डेसीबल यानी डीबी (db) में नापा जाता है। फुसफुसाहट लगभग 30 डीबी की होती है, आम बातचीत 60 डीबी की और मोटरसाइकिल की आवाज़ लगभग 95 डीबी की। शोध में कुछ गेम्स के दौरान आवाज़ का स्तर 88.5 से 91.2 डीबी के बीच पाया गया है।

विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) के मुताबिक 80 डीबी तक की आवाज़ों को वयस्क हफ्ते में 40 घण्टों तक सुन सकते हैं। 90 डीबी को 4 घण्टों से ज़्यादा नहीं और 95 डीबी की तो इससे भी कम समय तक। बच्चों के लिए तो ये सीमाएँ और भी कम हैं। तुम्हारे आसपास की आवाज़ें क्या इन सीमाओं से कम या ज़्यादा हो सकती हैं, ज़रा सोचकर बताना।

RNI क्र. 50309/85 डाक पंजीयन क्र. म. प्र./भोपाल/261/2021-23

शिकार का यह तरीका हिला देगा

आकार में मैना से थोड़ा छोटा, छोटा चक्राकार प्लोवर (मेरवा) पानी, खासकर मीठे पानी के स्रोतों के किनारों पर मिलता है। हमारे देश में ये सामान्य रूप से पाया जाता है और इसे पहचानने का एक तरीका है इसकी पीली चक्राकार आँखें।

रोहन चक्रवर्ती

अनुवाद: विनता विश्वनाथन

प्रकाशक एवं मुद्रक राजेश खिंदरी द्वारा स्वामी रैक्स डी रोज़ारियो के लिए एकलव्य फाउंडेशन, जाटखेड़ी, फॉर्च्यून कस्तूरी के पास, भोपाल, मध्य प्रदेश 462 026 से प्रकाशित एवं आर के सिक्युप्रिन्ट प्रा लि प्लॉट नम्बर 15-बी, गोविन्दपुरा इण्डस्ट्रियल एरिया, गोविन्दपुरा, भोपाल - 462021 (फोन: 0755 - 2687589) से मुद्रित।
सम्पादक: विनता विश्वनाथन